लम्हों की गाथा

(लघुकथा-संग्रह)

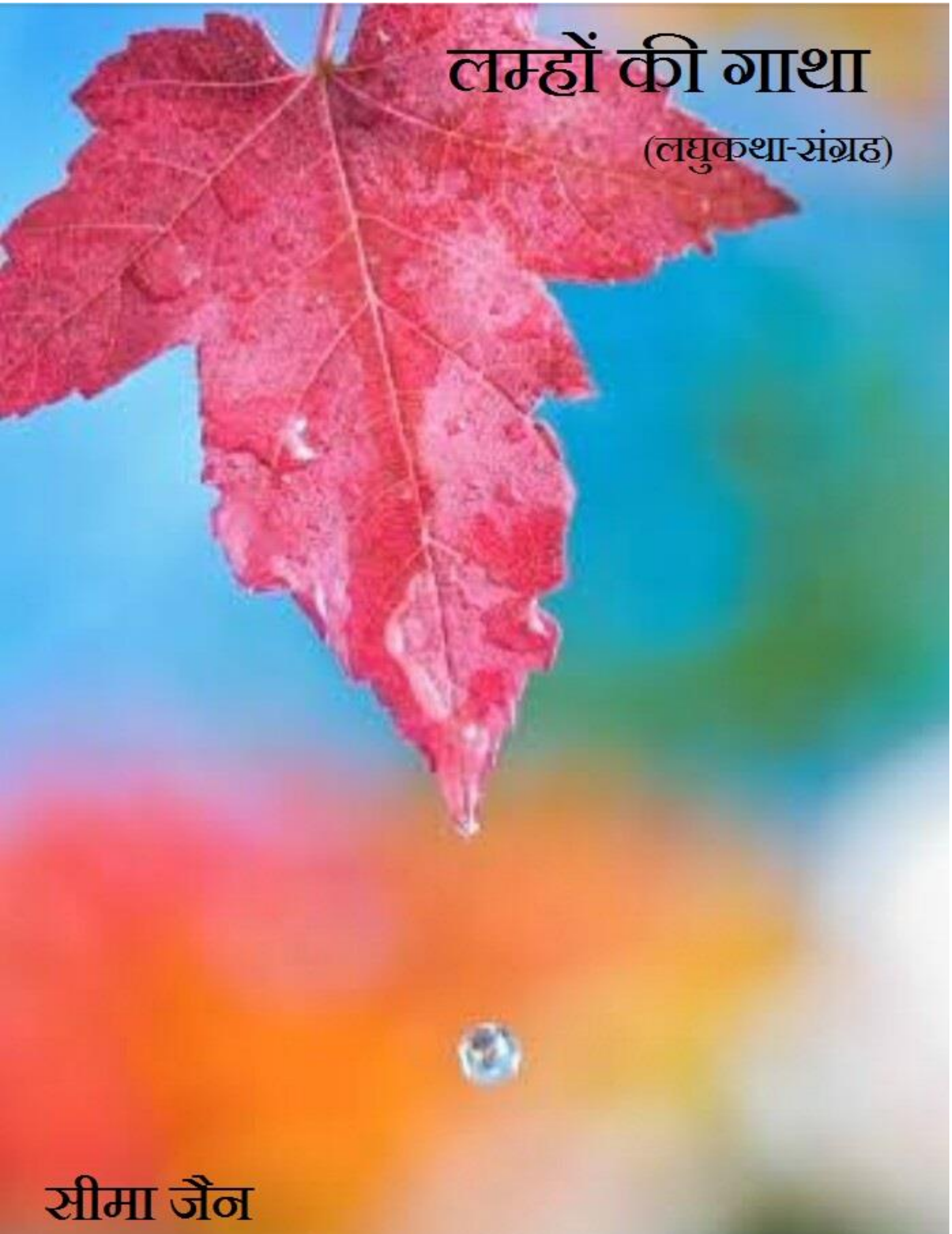

सीमा जैन

1.	पानी	-	5
2.	भविष्य	-	7
3.	रोशनी	-	9
4.	गंवार	-	11
5.	हद हो गई	-	12
6.	डर	-	14
7.	फ़ांस	-	16
8.	बचपन	-	18
9.	गाइड	-	20
10.	कांशी दिआं लकीरां	-	22
11.	ख़ाली हाथ	-	24
12.	नादान	-	26
13.	बुलबुल	-	27
14.	काज़ल	-	28
15.	परिवार	-	29
16.	दान	-	31
17.	आकार	-	32
18.	आंखों के बोल	-	34
19.	विदाई	-	35
20.	चींटी और हाथी	-	36
21.	ईमानदारी	-	37
22.	हालत	-	39
23.	इजाज़त	-	40
24.	ताकत	-	41
25.	मूक-विद्रोह	-	42
26.	सीख	-	44
27.	पापा सही थे...	-	46
28.	बेगुनाह	-	47
29.	महफूज़ बचपन	-	48

30.	कुछ नया	-	50
31.	करीब	-	51
32.	ताज़ा	-	52
33.	औकात	-	53
34.	सफाई की पाठशाला	-	54
35.	दूसरे की माँ	-	56
36.	इंद्रधनुष	-	58
37.	रीत	-	60
38.	अपने लिए	-	62
39.	गायब	-	64
40.	असली चोर	-	66
41.	समझदार	-	68
42.	सुकून	-	69
43.	उऋण	-	71
44.	मन किसका मैला?	-	73
45.	आरजू	-	74
46.	तीर्थयात्रा	-	76
47.	साथ	-	77
48.	कर्मठ	-	79
49.	तृप्ति	-	80
50.	मिट्टी	-	82
51.	एक नज़र	-	84
52.	दूसरा रूप	-	86
53.	चिता	-	87
54.	चैन	-	88
55.	परीक्षा	-	90
56.	मैं वारी जांवा (व्यंगात्मक लघुकथा)-		92
57.	जूठन	-	95
58.	रेत या चील	-	96

1.पानी

मेरी माँ ससुराल में पानी भरने के लिए ही लाई गई थी। राजस्थान के गाँवों में जो व्यक्ति थोड़ा खर्च उठा सकते है, वे दो शादियाँ कर लेते हैं। एक पत्नी अच्छे परिवार से घर में राज करने के लिए और दूसरी गरीब घर से पानी लाने के लिए। ऐसा करना नौकर रखने से सस्ता जो पड़ता है।

माँ सुबह तीन बजे उठती, कोसों दूर से पानी लाती और फिर दिन भर घर के काम में लगी रहती।

माँ के सुबह अँधेरे उठ जाने के कारण, मैं भी जल्दी ही उठ जाता था। तभी परिश्रम कर मैं पढ़-लिख गया। कार में बैठे माँ की बार-बार कही बात दिमाग में आ रही थी, "लाला, मन लगाकर पढ़ ले, ये पढाई तेरे काम आएगी।"

मैं दो साल बाद गाँव जा रहा हूँ, माँ को लेने। अब माँ शहर में मेरे साथ ही रहेगी। सुबह चार बजे घर पहुँचा। माँ घर पर नहीं थी। ध्यान आया, वह तो पानी लेने गई होगी। हाड़ कंपा देने वाली ठण्ड थी।

शीत भरे अँधेरे में कार पानी वाले रास्ते पर दौड़ा ली। पिछले पच्चीस सालों से माँ कितना कठिन जीवन जी रही है! सोच लिया था, आज के बाद माँ कभी इस सूने रास्ते से पानी लेने नहीं जाएगी।

मुझे देखकर माँ ने गले से लगा लिया, बोली -“यहाँ क्यों आया लाला? कितनी ठण्ड है। चल, घर चल, मैं पानी ले कर आती हूँ।”

मैने माँ का हाथ थामकर कहा- “माँ, घड़ा यहीं छोड़ और मेरे साथ घर चल।”

माँ के लिए पानी छोड़ना किसी आश्चर्य से कम नही था, वह बोली, “बेटा, फिर दिन भर...?”

मैंने माँ को बीच में ही रोक कर कहा- “उनको एक दिन बिना पानी के भी रहने दे न माँ!”

मैं माँ को अपने साथ लेकर शहर आ गया। सोसायटी में मेरा फ्लैट है, सारी सुविधाओं से युक्त। सायंकाल माँ को स्विमिंग पूल पर ले गया। वहां माँ उदास हो गई। मुझे तैरता देख वह रोने लगी।

घर पहुँचकर माँ से पूछा- “क्या बात है माँ, तुम उदास क्यों हो गई?”

माँ ने दर्द भरे स्वर में कहा- “जिन चार घड़े पानी ने पूरी ज़िन्दगी का सुख ले लिया, उस पानी का ये हाल...!”

मैंने भी क्या माँ के दर्द को समझा था? यदि समझा होता तो...

2.भविष्य

रवि अपनी रोती हुई माँ को समझाते हुए बोला, “माँ, रो मत, जो हो रहा है उससे घबराओ नहीं।”

दुःख से माँ का दिल सिसक रहा था। अपने आँसुओं को रोकते हुए बोली-“मेरा दिमाग ख़राब हो गया था जो तुझे यहां भेज दिया! तेरे ताऊजी क्या इस काम के लिए तुझे गाँव से लाये थे?”

अपने दर्द को छुपाकर रवि बोला, “माँ, क्या करते? पिताजी की बीमारी, सूखे खेत, गाँव में आगे की पढ़ाई के लिए न तो पैसे थे, न सुविधा। शहर आने को मिला, ये क्या कम है?”

“तू शहर पढ़ने आया था या नौकरों की तरह काम करने?”

“माँ, ताऊजी ने अच्छे कॉलेज में दाख़िला दिलवाया है। मुझे वजीफ़ा भी मिल रहा है।”

“घर में शराब के जूठे बर्तन उठा रहा है। एक कमरे में बाप तो दूसरे में बैठा बेटा तुझे आवाजें लगा रहे हैं। इन्हें शर्म नही आती?”

“माँ, आज मज़बूरी है, पढ़ना है इसलिए ये काम भी कर रहा हूँ।”

“ताई के लाड़ से ही भाई का ये हाल हुआ है। उसे इतना सर चढ़ा लिया कि आज शराब... । पहले ताऊ जी नही पीते थे, पर भैया के दुःख ने उन्हें भी शराबी बना दिया।”

“मुझे तो डर है कि कल को तू भी कहीं इन की तरह...” माँ की आँखें भविष्य की आशंका से भयभीत नज़र आ रही थीं।

“नहीं माँ, तुम्हारा बेटा इतना कमज़ोर नहीं है। मुझे पढ़ना है, ...बापू का इलाज करवाना है, मैं कैसे भटक सकता हूँ माँ...?” बेटा माँ की आँखों से आँखें मिला बोल रहा था।

3.रोशनी

दिये और तेल खरीद कर घर जा रही हूँ। धनतेरस का दिन है। जाकर पहले खाना बनाना है, फिर दिये जला लूँगी। बेटे को बुखार है। माँ इतनी कमज़ोर है कि उससे कुछ काम नहीं हो पाता।

घर पहुँची तो पड़ोसन रज़िया मुन्नी को गोद में लिए बैठी थी। मुझे देखकर बोली, “आज भी देर कर दी, तेरी मालकिन को दया नहीं आती क्या तुझ पर?”

थकी आवाज़ में मैंने कहा, “त्यौहार के दिन काम ज़्यादा रहता ही है। फिर मेहनताना भी ठीक-ठाक मिल जाता है, वह भी समय पर। ये भी क्या कम है, आज के ज़माने में!”

“अच्छा ठीक है। मैंने आटा लगा दिया है और भाजी काट दी है। ला, दिये मैं पानी में डाल देती हूँ। तू इस मुन्नी को संभाल, कब से रो-रोकर हलकान हुए जा रही है।”
रज़िया बोली।

मैं सोच रही थी, रज़िया नहीं होती तो मैं कैसे काम पर जा पाती? इसके भरोसे ही तो छोड़ जाती हूँ, बेटे, मुन्नी और माँ को। रज़िया दीये पानी में डालकर बोली, “अब मैं जा रही हूँ, मुझे भी रोटी बनानी है।”

“रज़िया, देख न बाहर कितनी रोशनी है।” “हाँ, तू भी कर लियो अपने दरवज्जे रोशनी, दिये भीग रहे हैं अभी।”

पर मेरे मन में तो कुछ और ही चल रहा था। मैंने जल्दी से डिब्बे में से गुड़ का टुकड़ा निकाला और बोली, “रज़िया जरा रुक!”

अब क्या हुआ?” रज़िया जाते-जाते ठिठक गई। जवाब में

मैंने रजिया के मुँह में गुड़ का टुकड़ा डाल दिया और बाँहें फैलाकर बोली, “दरवज्जे पर रोशनी तो वे चार दिये करेंगे ही, पर असली रोशनी तो तेरे दिल में है!”

4.गँवार

आज शंकर की जगह उसका बेटा दूध देने आया।

घर के दरवाज़े पर उससे दूध लेते हुए मैने पूछा-"सुभाष, आज पिताजी क्यों नही आये?"

सुभाष ने कहा-"उनकी तबियत ख़राब है भाभी जी।"

दूध लेकर घर में जाने को पलटती उससे पहले किसी जीप ने सुभाष की मोटर सायकिल को टक्कर मार दी।सारा दूध ज़मीन पर फैल गया।

आगे सुभाष उसके पीछे मै भागी।इतने सारे दूध का नुक़सान मुझे बेहद दुःखी कर गया।

सुभाष उन जीप वाले लड़कों से हाथ जोड़कर कह रहा था-"कोई बात नहीं, भाई साहब अनजाने में हो गया आप परेशान न हो!"

वो लड़के बड़ी गर्वीली मुस्कान के साथ जीप आगे बढ़ाकर चले गए।

ज़मीन पर फैले दूध को देखकर मेरे गुस्सा सातवें आसमान पर था। मैने सुभाष को डाँटते हुए कहा-"तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया था क्या, गँवार! इतना नुक़सान हो गया और तू उनके हाथ जोड़ रहा था।"

अपनी गिरी हुई मोटर सायकिल को उठाते हुए वो बोला-"भाभी, पिछली बार की समझदारी का ये निशान है।"

उसने आपने माथे पर टांके के निशान को दिखाया और बोला-"माँ ने अपने मरे मुँह की कसम दे कर कहा था। ख़बरदार! जो आज के बाद तूने किसी से हक़ की बात की तो मेरा मरा मुँह देखेगा।बस भाभी जी तभी से गँवार बन गया हूँ।"

5.हद हो गई

नौकरी लगने के बाद पहली बार माँ, मेरे साथ दिल्ली जा रही थी। हमने अपनी बर्थ पर सामान रखा और ट्रेन चल दी। एक बुज़ुर्ग दंपति हमारे इंतजार में ही बैठे थे। उनकी एक बर्थ ऊपर की थी। उन्होंने मुझसे बर्थ बदलने की बात कही और उनके सूटकेस का नम्बर वाला ताला उनसे नही खुल रहा था वो मुझसे खुलवाया।

ये सब देखकर माँ को कुछ अच्छा नही लगा और वो बुदबुदाते हुए बोली- "हद हो गई!"

मैने उनको आँखों से चुप रहने का इशारा किया।

जब हम माँ बेटे खाना खाने लगे तो मैने माँ से कहा-"अचार तो निकालो, मुझे तो पहले वो चाहिए।"

"अचार की बर्नी तो घर में ही छूट गई।" माँ जानती थी उनके हाथ का अचार मुझे बहुत पसन्द है।

हमारी बात जब उन दंपति ने सुनी तो जिद् करके अपने पास से अचार हमें दे दिया। जिसे खाते ही मेरे मुँह से निकल पड़ा-" माँ, ये तो बिल्कुल तुम्हारे हाथ जैसा ही है।"

अगले स्टेशन पर मुझे पानी का बॉटल खरीदना था। माँ बोली -" रवि, अब तू भी सो जा! रात के बारह बजे अगला स्टेशन आएगा, तबतक मैं तो सो जाऊँगी तू अकेला बाहर जायेगा मुझे पसन्द नहीं!"

-"माँ, अब मैं बच्चा नही हूँ। तुम चिंता मत करो सो जाओ।"

हमारी बात सामने वाले बुज़ुर्ग सुन रहे थे।

वो माँ से बोले-" आप चिंता मत करो दरवाज़े पर मैं खड़ा रहूँगा इसका ध्यान रख लूंगा।"

सुबह जब स्टेशन आया तो उन दम्पति ने जिद् करके मुझे आचार की बर्नी दे दी। बोले-"अब अगली बार जब माँ भेजे तबतक इससे काम चला लेना।"

उनके स्नेह के कारण हम उनको मना नही कर पाये। स्टेशन पर उनका सामान उतारकर हम जैसे ही आगे बड़े वो बोले-"बेटे, हमारी गाड़ी आ गई है हम आपको आपके घरतक छोड़ देते है।"

अबकी बार माँ की आँखे एक बार फिर कह उठी,"हद हो गई!"

घर जाकर अपना सामान रखा और माँ ने मेरे पास आकर मेरे माथा चूमते हुए कहा-"हदों में जीना जीवन नही है। ये आज तुझसे सीखा।"

अबकी बार मेरे आँखे कह उठी....

6. ड़र

रविवार का दिन था। सौरभ मेरे सामने बैठा था। उससे बात करने की हिम्मत नही हो रही था। अखबार से अपना चेहरा छुपा, आँसू रोकते हुए बोलने की कोशिश की तो दोस्तों के शब्द कानों में बजने लगे– 'बड़े बेवकूफ़ हो तुम! मकान बेचकर बीस लाख बेटे के हाथ पर रख दिये, इतना विश्वास! ; अच्छे को बुरा बनते देर नही लगती, वह तभी तक अच्छा था जब तक पैसे तुम्हारे पास थे; दस-पन्द्रह दिन का कहा था, तीन महीने हो गए; कहीं तुम्हें सड़क पर न पहुँचा दे एक दिन; वैसे उन्हें अब तुम्हारी ज़रूरत भी क्या है? लगता है सत्तर लाख के विला के चक्कर में तुमने पुराना मकान भी गंवा लिया।'

ख़ुद को सम्हाला और सौरभ से पूछा, "बेटा, बहुत समय हो गया, हम कब शिफ्ट हो रहे हैं?"

सौरभ जो सोचता था मुझे उसपर अटूट विश्वास है बोला, "बाबूजी, एक दूसरा ड्यूप्लेक्स भी देखा है। मुझे लोन नहीं मिल पायेगा इसलिए विभा अपने ऑफिस में कोशिश कर रही है। शायद काम हो जाये।"

मन डूबने लगा। जो मुझे दिखाया उसे छोड़ दूसरा मकान क्यों? फिर भी बात तो करनी ही थी। इसलिए बोला, "बेटा, जो हमने देखा था, वो भी तो अच्छा था, फिर दूसरा क्यों?"

"बाबूजी, वहाँ आसपास मन्दिर नही था और चौराहा पार करने के बाद ही कोई दुकान थी। आप और माँ को अकेले जाने में दिक्कत होती। अभी जो दूसरा ड्यूप्लेक्स देखा है, वहाँ सबकुछ पास ही है। आप दोनो को आराम रहेगा। बस, दस लाख ज़्यादा हैं। इसीलिए थोड़ा वक्त लग रहा है। कोई परेशानी है क्या बाबूजी?"

अब आँखों के आँसू छुपाने की ज़रूरत नही थी। मैने भर्रायी आवाज़ में कहा, "तेरे होते कभी कोई चिंता हो सकती है क्या?"

7. फाँस

तीन पीढ़ियों से इस परिवार के साथ हूँ। क्या नही देखा मैने! बेटी की विदाई, बहू का आगमन और बहू बेटी के साथ व्यवहार का भेदभाव।

पहली पीढ़ी की बहू के माता-पिता तो कभी इस घर में खाना न खा सके।एक बार बहू बीमार थी उसे देखने आये और गर्मी के कारण उन्होंने जो पानी पीया उसका ताना बड़ी बहू ने जब तक जी तब तक सुना।

उसके बाद दूसरी पीढ़ी, बहू के माता-पिता ने खाना खाया पर प्रेम नही, बस एक लिहाज़। बहू क्या करती जाते-जाते अपने पिता को यहाँ की मिठाई भी न दे सकी।माँ जी से पूछा था पर...

आज तीसरी पीढ़ी की छोटी बहू रोली ने वो कर दिया जो मै देखने के लिए तरस रही थी।

बड़ी बहू के साथ जो होता था वो देख चुकी थी।

रोली माँ से बोली-"माँ,बाबूजी की पसन्द का खाना बना ले या उनके लिए...?”

माँ क्या कहती? बेटी के ससुराल से कोई आ जाये तो दोनों बहुएँ कितनी आवभगत करती है ये कैसे भूल सकती है।

बोली-"हाँ,जो तेरे बाबा को पसन्द है वही खाना बना ले।"

रोली बोली-"माँ,यहाँ की फैनी बाबा को देनी है तो में ही बाज़ार से जाकर ले लूँ या...?"

माँ ने भी कहा-"रोली घर में भी कोई मिठाई नही है ऐसा कर सारा सामान इकट्ठा ही ले आ।"

आज रोली के बाबा के जाने पर मैने जो सुकून पाया उसके लिए शब्द नही है मेरे पास।

वैसे भी मै इस घर की खाने की मेज हूँ मेरे शब्दों की ज़रूरत ही किसे होगी।
मेरा एक तिनका भी गड़ जाये तो आप कहते हो फाँस गड़ गई और मेरे मन में जो इतने सालों से गड़ा था उसे क्या कहोगे?

नाम चाहे जो हो, पर आज मेरी भी फाँस निकल गई।

8.बचपन

मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। रोज़ स्कूल, होमवर्क और बाद में ट्यूशन। क्या करूँ? माँ मुझे नहीं पढ़ातीं हैं कहती हैं, 'मेरे पास टाइम नहीं है।'

मैं शाम को बहुत कम समय खेल पाता हूँ। मुझे खेलना बहुत अच्छा लगता है। टीवी मुझे पसन्द नहीं। रात को माँ अपने घर के काम और फिर मोबाईल में व्यस्त रहती हैं। मुझसे बहुत कम बात करती हैं। पापा ऑफिस से देर से घर आते हैं।

आज मैं खुश था। आज माँ अपनी मित्रों के साथ 'हरिद्वार वाले' के यहाँ आई थीं। यहीं मेला भी लगता है। झूले और खिलौने सब यहाँ मिलते हैं। वे सब इकट्ठे हुए और लगे खेलने, वो हॉउसी का खेल होता है ना! मैं बैठा बस देख रहा था।

उकताकर माँ से कहा, 'माँ,बाहर चलो मुझे झूले झूलने हैं।' माँ ने कहा, 'पहले गेम पूरे होने दो फिर बाहर चलेंगे।' मैं क्या कहता। समझदार बच्चा बने रहना ज़रूरी है। नहीं तो फिर माँ नाराज़ होतीं, 'अवि तुम कब ....?' चुप बैठा इंतज़ार करता रहा। कब ये गेम खत्म हों और हम बाहर जायें।

हम जैसे ही बाहर निकले मैं झूलों के पास दौड़ा। बस दो ही झूलों पर बैठा और माँ ने कहा, 'देर हो रही है, अब घर चलो, हम फिर आयेंगे।' मेरा मन नहीं भरा था। मैं और घूमना चाहता था। माँ से कहा भी तो बोलीं, 'ज़्यादा ज़िद नहीं, अवि घर चलो।'

घर आकर मैं रोने लगा तो माँ चिल्ला पड़ीं, 'अवि तुम बहुत ज़िद्दी हो गए हो। बिलकुल कहना नहीं मानते हो।'

मेले में पूरे वक़्त चुप बैठा रहा। झूले,जो झूलने थे, वो बाद में झूले। वो भी बस दो।

अब आप ही बताओ और कितना समझदार हो सकता हूँ? वैसे खेलने की उम्र किसकी है, मेरी या माँ की?

9.गाइड

पहना तो हमने आज भी सलवार सूट ही है। मंच पर खड़े हैं हम, जूनियर वैज्ञानिक का ख़िताब लेने के लिए। फर्क ये है कि कभी इसी सूट के कारण किसी ने हमें ‘बहन जी’ कहा था। वे भी आज दूर से हमें देख रही हैं।

आज से तीन साल पहले हम इस कॉलेज में आए थे। अपने गाँव में 12 वीं में अव्वल आए तो गुरु जी ने हमें शहर में इस कॉलेज में दाखिला दिलवाया। माँ-बाबा को मनाना आसान नहीं था। पहले दिन कॉलेज में किसी से भी बात नहीं हुई। होस्टल में जो पहली मित्र बनीं वो वे ही थीं।

उन्होंने कहा, "ये क्या ऐसे बहन जी की तरह रहोगी? ये सलवार सूट तो अपने गाँव के लिए ही रख दो सम्हाल कर। अब ये जीन्स पर कैसा शर्ट पहना है? बाबाजी का झंगा ! तुम शहर के सबसे बड़े कॉलेज में आई हो। अपने ढंग बदलो।"

और हम बस चुप ही रह गए थे।
वे फिर बोली थीं, "फोन? एंड्रॉइड के बगैर कैसे रहोगी? व्हाट्सअप के बिना जीना इम्पोसीबिल है।"

"...यहाँ हम पढ़ने आये हैं ना बहना! " हमने प्रतिवाद किया था।
"बहना..क्या बहना? डूड! यहाँ ये सब नहीं चलेगा। जस्ट चेंज योरसेल्फ! हाउ कुड??" वे इतराकर बोली थीं।

"भाषा तो हमें अंग्रेजी और फ्रेंच भी आती है। पर हिंदी का ऐसा हाल? और हमारे पास लेपटॉप है न, फिर दूसरे फोन की क्या जरूरत?" हमने फिर अपना तर्क रखा था।

"मेरा कहा मानो, नहीं तो सब तुम पर हँसेंगे। जैसे मैं गाइड कर रही हूँ वैसे करो। कोई तुम्हारे पास बैठना भी लाइक नहीं करेगा।" वे झल्लाईं थीं।

तीन साल का सफर!! खुद को बदला, पर ऐसे नहीं कि अपनी जड़ों को ही भूल जाएँ। न तो हिंदी में अंग्रेजी का ऐसा घालमेल किया और न ही एंड्रॉइड लिया। बस यूँ ही अपने आत्मविश्वास का हाथ थामे....आज भी वही सलवार सूट है। हाँ 'ड्रेसिंग सेंस' आ गया है।

अब आप ही बताओ किसे किसके 'गाइडेंस' की जरूरत है?

10.काशी दिआं लकिरां

जब से नशामुक्ति अभियान से जुड़ी तब से ही काशीबाई को जानती हूँ।तीन बच्चे और शराबी पति जो हर रोज़ अपनी तो अपनी काशीबाई की मज़दूरी के पैसे भी ज़हर में डुबो देता।

काशीबाई, कभी रोटी, कभी भूखे पेट तो कभी नमक चावल खाकर अपने दिन काट रही थी।

आज काशीबाई मुझे अपने साथ अपनी झोंपड़ी में ले गई बोली-"दीदी, चलो ना! आज बहुत दिनों बाद रोटी के साथ भाजी बनाई है।"

ज़मीन पर बैठी मैं काशी को देख रही थी।उसके चेहरे की ख़ुशी ने मुझे भी सुकून दिया।

चूल्हे के ऊपर कोयले से खिंची लकीरों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।मैने पूछा-"ये क्या है काशी?"

उसने बोला-"दीदी, हम अनपढ़ अपने पैसों का हिसाब कैसे रखे?तो ये लकीरें उसीके लिए है।रोज़ पैसे मिलते तो एक लकीर और पति ने कमाई ले ली तो लकीर काट देती।"

मैने लकीरों को ध्यान से देखा तो कहा-"अरे, पर इसमें तो ज़्यादा लकीरें कटी है।"

काशी ने चहकते हुए कहा-"ऊपर नही, नीचे देखो दीदी! यहाँ लकीरें नही कटी है।दीदी तुम्हारी बातें सुनकर ही तो मेरे मरद को बात समझ में आई।चार दिन पहले जब ये लकीरें देखी तो रो पड़ा, वो कहने लगा-तू, बच्चों के साथ कितना भूखा रही री! इतनी सारी कमाई मैं पी गया? अब हम मिलकर रोटी खायेंगे और बच्चों को भी भरपेट खिलायेंगे।"
अपने आँचल से आंसू पोंछती काशीबाई बोली-"ये भाजी वो ही लाया है दीदी।"

रोटी का कौर हाथ में लिए मै सोच रही हूँ मै सीखने आई हूँ या सिखाने?
कल नही, आज के साथ जीना ही जीवन है।

11.खाली हाथ

इस शहर में हम कुछ दिन पहले आये।एक बड़ी कंपनी में हम पति-पत्नी दोनों काम करते है।

माता-पिता भी साथ है, क्या करें इकलौती सन्तान होने का दण्ड!

पिता जी रिटायर्ड हो चुके है।उनको इशारों में हम समझा चुके है कि वो अपना गुज़रा अपनी जेब से कर ले।

हम दोनों की गाड़ियाँ, बेटे का आवासीय विद्यालय, ख़र्चे का कोई अंत है क्या?

आज मेरा सहकर्मी रवि घर आया था। उसके साथ किसी से मिलने जाना था।

रवि बोला-"सर, ये शहर आपके लिए नया है मैं गाड़ी ले कर आता हूँ साथ में चलते है।

आते-जाते उसने माँ से कब और कितनी दोस्ती कर ली पता ही नही चला।

मन्दिर हो या बाज़ार वो कैसे जाते ये पूछने का काम हम दोनों ने कभी नही किया।

रीता कहती-"एक बार सेवा करना शुरू करोगें तो आफ़त गले पड़ जायेगी।ख़ुद ही करने दो उन्हें अपने काम।"

बेटे को लेकर बगीचे तक गया था।घर के बाहर रवि की गाड़ी खड़ी देखी।

रवि की गाड़ी में झांककर मैंने कहा-"आज कैसे? किसी... से मिलने जाना है क्या?"

रवि ने बड़े इत्मिनान से जवाब दिया-"नही सर, आज छुट्टी है तो सोचा माँ-बाबा को शहर घुमा देता हूँ।पिछली बार बाबा मन्दिर से लौटते समय भटक गये थे, तो बड़ी मुश्किल हो गई थी।जब तक इनको रास्ते याद न हो जाये मैं ही इनको घुमा दिया करूँगा।माँ के साथ रहता हूँ तो मुझे घर की कमी नही लगती।"

आज पहली बार धक्का लगा जैसे कोई ... हाथ से छूट गया हो।

एक अविवाहित लड़का इस समय किसी लड़की या दोस्तों के साथ भी हो सकता था, उसकी जगह ये मेरे माँ...
माँ-बाबा से याद नही कब हाथ हिला कर....
वो तो बिना कुछ बोले रवि की गाड़ी में बैठ गये।
मैं हारा सा अपने बेटे की उंगली थामे...

12.नादान

"नमस्कार पण्डित जी, कैसी रही काशी यात्रा अनुज के साथ? सम्मेलन में तो उसनें झंडे गाड़ दिए होंगें? आठ साल के बच्चे के मुख से कंठस्थ श्लोक सुनकर लोगों ने क्या कहा?"

पण्डित जी ने झल्लाते हुए कहा-"कहते तो तब जब वो मंच पर टिकता, वो तो पास के मन्दिर में चला गया था। वहाँ वी.आई.पी. लाइन में लग गया और श्लोक बोलता हुआ हाथ पकड़कर बुजुर्गों को मन्दिर में ले जा रहा था।पण्डित की वेशभूषा और श्लोक सुनकर लोग उसे रास्ता दे रहे थे।"

-"माने उसने शास्त्रार्थ नही किया?

-"क्या ख़ाक करता! उसका मन तो लोगों में रमा था।दूसरी बार बाहर गया तो उसे देखकर मेरा सर घूम गया वो एक महिला की चप्पल ढूँढने में मदद कर रहा था। इस नादान को शास्त्र याद करने थे इसने जीवन में उतार लिए।"

-"अब क्या पण्डित जी, काशी में अनुज को पढा़ई नहीं करवाओगे?"

-"कुछ नहीं, इसको डॉक्टरी की पढा़ई करवा दूंगा। मानव सेवा के साथ कम से कम अपना पेट तो भर लेगा। पंडिताई के क्षेत्र में टिके रहने के गुण इसमें नहीं है।"

13.बुलबुल

मेरीईमानदारी सरकारी अधिकारियों को रास नहीं आई। झूठा इल्ज़ाम लगा, मुझे बेईमान साबित कर, रास्ते से हटा दिया गया।

तीन महीने से घर में पड़ा था। परिवार में माँ, पत्नी और डेढ़ वर्षीय प्यारी-सी बेटी बुलबुल ही थे। परिवार छोटा था, पर आवश्यक खर्चे तो थे ही। कमाई का कोई साधन नहीं बन रहा था। कोई रास्ता नही दिख रहा था। 'भूखे का कोई ईमान नहीं होता।' वाली बात मुझ पर भी लागू हो रही थी। एक दिन टी.वी.पर निगाह ठहर गई। बाबा कह रहे थे–'लाल चटनी की जगह हरी खाने से कृपा बरसेगी.. बूट की जगह चप्पल पहना करो… '

भूखे पेट के ऊपर टिके मेरे दिमाग को भी एक बात सूझी। बीवी को बताया तो सर पकड़ कर बैठ गई। बोली–"पागल हो गए हो क्या? कैसे कोई विश्वास करेगा?"

मैने कहा–"जब चटनी चल सकती है, काले-पीले बूट चल सकते हैं तो हमारी बात क्यों नहीं चलेगी। तू बस दिमाग से काम ले। कोई काम नही मिल रहा है, भूखे मर रहे हैं…काम मिल गया तो छोड़ देंगे…माँ और बुलबुल का सोच!"

"कल तू बुलबुल को गोद मे लेकर बैठ जाना। लोग अपनी परेशानी हमारी बेटी से कहेंगे। हम कहेंगे कि उनकी बात गाँव में रह रहे हमारे नब्बे वर्षीय बाबा जी तक पहुँच रही है। वे आपकी समस्या का हल बता देंगे…हमारे बाबा बुलबुल के माध्यम से सब सुनते हैं।"

पत्नी चुपचाप सुनती दिखी तो मैंने आगे कहा, "हम कहेंगे कि बाबा जी के आदेश पर ही हम ये सेवा का काम कर रहे है।"

कुछ ही दिनों में बुलबुल का खेल चल निकला। बुलबुल सोने की चिड़िया में बदलने लगी।

14.काज़ल

बचपन से ही सजने-संवरने का शौक नहीं रहा। सादगी ही मुझे भाती है। माँ कहती – 'इसकी सारी सुंदरता इसकी आँखों में है। घुँघराले लम्बे बाल और मोहक आँखें सबको मोह लेते हैं। एम.बी.ए. करने के बाद शादी हुई। सूरज अपने माता-पिता के साथ मुझे पसंद करने आये थे। "इतनी सुंदर और सादगी पसंद लड़की मैंने आज तक नहीं देखी", देखते ही सूरज की माँ बोली थी। रिश्ता पक्का और तुरंत शादी।

शादी के बाद कहीं भी मिलने जाते तो सादी-सी साड़ी या सूट और आँखों में काजल। तारीफ बहुत होती:

"भाभी, तुम सब को पीछे छोड़ देती हो।"
"तुम्हारे सिवा किसी को देखने को मन ही नहीं करता दीदी।"
सूरज साथ होते। मगर लगता जैसे वे अनमने से हो जाते हैं। कुछ कहते तो नहीं, पर कुछ ज्यादा ही चुप रहने लगे हैं।

आज भी पार्टी में जाना है, मेरी मित्र की सगाई है। लाल शिफॉन की साड़ी पहन जैसे ही मैने काजल की पैंसिल उठाई, सूरज बोले, "हमेशा इतना सजना जरूरी है क्या?"

'मैं और सजना?' हैरान थी मैं–'बीवी सुंदर तो हो, मगर उसकी तारीफ सहन नहीं होती।'

15.परिवार

बेटे साहिल ने छत्तीस की उम्र में शादी के लिए हाँ की है। मेरे लिए खुशी की बात है।

लड़की उसकी कम्पनी में इंजीनियर है। पर मुश्किल यह है कि वह एक अनाथ लड़की है। अनाथालय में पली-बढ़ी है। दान-दहेज तो वैसे भी हमें नहीं चाहिए। पर न परिवार, न संस्कार और हमारे रीति-रिवाज की कोई बात भी नहीं। इस रिश्ते को मना कर दिया तो वह फिर कभी शादी के लिए तैयार होगा या नहीं, कहना मुश्किल है।

साहिल बोला, "माँ, जब उससे मिलोगी तो तुम्हें लगेगा कि वह सबसे अलग है।"

मीरा को घर लाया था साहिल। रंग-रूप में, देखने में एकदम साधारण। क्या देखा साहिल ने जो वह इस कदर अच्छी लगी मीरा? फिर भी मैं 'हाँ' तो करना चाहती थी, पर मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा था। साहिल सब समझ रहा था।

कल मेरे पास आकर बोला, "माँ, अनाथालय के भी अपने रीति-रिवाज और संस्कार होते हैं। तुम यह भी सोचो कि वहाँ मीरा का बचपन कैसे बीता होगा? भूख, सर्दी, गर्मी, सीमित साधन। सब सहकर पढ़ना और जीना आसान नहीं रहा होगा उसके लिए।"

"हाँ, यह बात तो सही है।" मैंने सहमति में अपना सिर हिलाया।
"लेकिन आज, जब वह अपने पैरों पर खड़ी है तो उसी अनाथालय की पैरों से लाचार वार्डन की सहायता करती है…।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है।" मेरे मुख से निकल गया।

“…मैं चाहता हूँ कि मीरा को माँ का प्यार मिले, परिवार का प्यार मिले!” साहिल ने जैसे मुझे अपना अंतिम निर्णय सुना दिया; साथ ही जवाब के लिए मेरी आंखों में देखा!

मेरा मन हल्का हो गया। मैंने साहिल का हाथ अपने हाथों में लिया और बोली, “मीरा को इस परिवार में प्यार ज़रूर मिलेगा बेटा!!”

16.दान

सासू-माँ की तबियत ठीक नहीं थी। एकादशी पर माँ मन्दिर नही जा सकी। मुझे मन्दिर में पूजा का सामान और एक सौ एक रुपये पंडित जी को देने को कहा था। वही देकर लौट रही थी। घर के बाहर कुछ बच्चे खड़े थे। एक पन्नी में केरियाँ तोड़ कर लाये थे। मुझे देखकर बोले-"आंटी ले लो ना!"

मैने उन्हें रोका और अंदर जाकर माँ से कहा, "माँ जी, पास के बगीचे से बच्चे केरी तोड़ कर लाये हैं। ले लें क्या?"

सासू- माँ ने कहा, "रुक रोली, मै देखती हूँ।" केरी देखकर सासू-माँ बोली, "कितने में दोगे?"

बच्चे बोले, "एक सौ पचास रुपये में आंटी जी!"
"अरे, इनमें से कुछ तो टूट गई हैं। ज़्यादा से ज़्यादा सौ रुपये दे देंगे।"
बच्चे बोले, "आंटी जी, पांच किलो से भी ज़्यादा हैं। सुबह से तोड़ रहे थे, अब जा कर इतनी हो पाई हैं।"

सासू- माँ ने ज़िद पकड़ ली, वे नही मानीं। मैने कहा भी "माँ जी, बच्चों ने धूप में इतनी मेहनत की है। बाजार में तो इससे ज्यादा ही भाव होगा। बच्चे ही तो हैं, दे दीजिये ना एक सौ पचास रुपये!"

"अरे नही, काहे की मेहनत! मुफ़्त में बगीचे से ही तो लाये हैं। देना है तो दो, नही तो जाओ यहाँ से!"

माँ जी के दो टूक जवाब से बच्चे चुपचाप चले गये।
उनको जाता देख, मुझें बहुत बुरा लगा। (मन में आवाज़ उठी 'बेचारे बच्चे!' अचानक लगा बेचारा कौन वो या मैं?)

17.आकार

उबली सब्जियों का कटोरा हाथ में देते हुए जीजी बोली-“ कबीरा, ये दे गई है तुम्हारी लाड़ली बहू तुम्हारे लिए! अब तुम अकेले हो गए तो बहू-बेटा तुम्हें अपने पास ले आये ये तो उन्होंने ठीक किया पर आजकल मैं जो देख रहीं हूँ मुझसे सहन नहीं हो रहा है!”

मुस्कुराते हुए मैंने पूछा-“ क्या जीजी?”

वो चिढ़ते हुए बोली-“ खाना हो या घूमना, सब बहू के कहने पर; पैर का मोज़ा हो या सिर की टोपी वो कहती हैं तो पहन लेते हो।“

मैंने हँसते हुए कहा-“ तो क्या हुआ जीजी? बच्चा, बूढ़ा एक समान!” जीजी मेरी बात पर हँसी नहीं और बोली-“ पूड़ी की जगह ओट्स, फल भी कितने खाने हैं ये भी वही तय कर रही है। ये सब कुछ ज़्यादा नही हो रहा है मेरे भाई? मुझे तो जो करना है मैं तो वही करती हूं। त्यौहार पर मंदिर की लंबी लाईन में खड़े रहना हो या पूड़ी खानी हो मैं तो अपने मन की ही सुनती हूं।“

जीजी को अपनी बात समझाना चाहता था इसलिए सब्जियां खाते हुए मैंने कहा-“अब ज़्यादा वज़न और घुटनों की परेशानी के कारण आप भी तो परेशान हो रही हो ना जीजी? अब कॉलोनी के मंदिर में ही त्यौहार मना लिया तो क्या हर्ज़ है? बच्चे आपको अस्पताल ले जा रहें हैं पर तकलीफ़ तो आप ही ज़्यादा उठा रही हो ना?”

जीजी को मेरी बात अच्छी नहीं लगी वो बोली-“ तो क्या अब सेवा भी नहीं करेंगें?”

-“जीजी, बहू आज जो मेरा ख़्याल रख रही है वो क्या सेवा नही?” कल जिनको हमनें आकार दिया उनसे तक़रार् कैसी? दिल और मधुमेह की बीमारी के बाद यदि अब भी आदतें नहीं बदली तो कब?” जवाब देकर मैं

तो फ़िर से खाने लगा पर जीजी हाथ में पूड़ी का कौर पकड़े मुझे देख रहीं थीं।

18.आँखों के बोल

ट्रेन में एक महिला गोदी में बच्चा लिए, सर पर साड़ी का पल्लू डाले टॉयलेट की तरफ जा रही थी। चलते-चलते अचानक उसके पैर डगमगाये और वो गिरते-गिरते बची। मैंने झट से उठकर उसका हाथ थाम लिया! चेहरा देखा तो मेरे बचपन की सहेली 'वृंदा'! हम दोनों के मुँह से एक साथ निकला-"अरे तुम!"

मेरे पति अपने फोन की दुनिया में गुम थे। उसके पति से तो नमस्ते भी नहीं हो पायी वो खर्राटें ले रहे थे।

एक खाली सीट देखकर वृंदा बोली-" चल ना गुंजा, उधर बैठ कर बातें करते हैं।

सामने एक जोड़ा हाथ में हाथ थामे बैठा अपने में ही गुम था। वो दोनों धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। उनके होंठ कम और आंखे ही ज़्यादा बोल रही थी।

वृंदा ने फुसफुसाते हुआ कहा-" देख गूंजा, कितने बेहया हैं! इन्हें अपने आस-पास वालों की भी ख़्याल नहीं? कैसे एक दूसरे के पास बैठे हैं!"
एक उड़ती नज़र उस जोड़े पर डालने के बाद मैंने वृंदा से पूछा-" यदि तेरे पति भी ऐसे ही प्यार से तुझसे बातें करते तब भी क्या तू इनको बेहया कह पाती?"

सिर का पल्लू ठीक करते हुए, मचलते बच्चे को सम्हाले उसकी आंखें मेरी आँखों में सवाल का जवाब ढूंढ़ने लगी!

19. विदाई

हमें एक उठावने में जाना था। घर पहुँचने की जल्दी थी। तीन बज गए थे।

घर में घुसते ही देखा, साक्षी तैयार ही नहीं थी। उसे देखकर मैंने कहा, "अरे, तुम तैयार नहीं हुई? देरी हो रही है। चार बजे तो बैठक खत्म हो जायेगी।"

साक्षी ने कहा, "मुझे नहीं जाना है।"
मुझे समझ नहीं आया, वो मना क्यों कर रही थी।

मैंने उसे समझाते हुए कहा, "हमारे पड़ोसी हैं वे, व्यवहार भी कोई चीज है, और तुम्हें तो चाचा जी से बहुत लगाव था। फिर भी उठावने में जाने से..."

साक्षी ने दु:खी मन से कहा, "यही तो दु:ख है, शर्मा जी ने अपने नि:संतान चाचा जी की चार सौ बीघा जमीन अपने नाम करवा ली, उन्हें घर में नौकरों की तरह रखा, उनका गलत इलाज करवाया। वो रोते थे और सब बताते थे। पर हमने उनकी सहायता नहीं की। जीते जी तो उन्हें निभाया नहीं, फिर आज यह दिखावा किस लिए?"

मुझे गुस्सा आ गया। मैंने कहा, "तुम भी ग़ज़ब करती हो! दूसरों के घर के मामले में हम कैसे बोल सकते हैं? तुम उन्हें खाना देने जाती तो थी, इससे ज्यादा हम क्या कर सकते थे। कॉलोनी में झगड़े करवाते क्या?"

साक्षी ने कहा, "दोस्ती और दिखावे के ढोंग से तो अच्छा ही होता। अब जब शरीर चला गया तो ये 72 घण्टे की बिदाई में क्या रखा है? मुझसे नहीं हो पायेगा, तुम चले जाओ।"

घर से अकेले निकलते समय मैं असली विदाई क्या है इसके बारे में कई-कुछ सोच रहा था।

20. चींटी और हाथी

भोला काका कई सालों से हमारे घर से जुड़ें हैं। वो बाबूजी के लिए गाड़ी चलाते थे। अब वक्त बदला, व्यापार बड़ा और काका की उम्र भी, तो वो घर में ही रहते हैं। माँ, बच्चों को कंही जाना-आना हो तो वो ले जाते हैं; या घर के छोटे-मोटे काम कर देतें हैं।

उनका फोन रिचार्ज हमेशा मैंने ही करवा दिया है। कुछ महिनों से 500 का रीचार्ज़ होने लगा। आज मैंने उनसें पूछा-" काका, क्या बात है, आजकल बातें बहुत हो रहीं हैं?"

-"नहीं बेटा, अभी कुछ महिनों से माँ जी की तबियत ठीक नहीं है। वो पलंग से उठकर बात करने नहीं जा सकती तो मेरे फोन से बात कर लेती है।"

-"अरे,माँ ने मुझे क्यों नहीं कहा?"

-" बेटा आप बहुत व्यस्त रहते हो। उन्होंने बहू को एक-दो दिन बात करवाने के लिए बहुत बार कहा था। पर बहु 'अभी करवातीं हूँ' कहकर भूल गई। तबसे मैंने ही अपना फोन उनके पास रख दिया।"

-"अरे, ये मेरी ही ग़लती हो गई। मैंने सोचा ही नहीं कि माँ पलंग से उठ नहीं सकती हैं।"

-"कोई बात नहीं बेटा ये तो छोटी-छोटी बातें हैं। क्या फ़र्क पड़ता है। मैं भी तो इस परिवार का ही हिस्सा हूँ।"

-“नहीं काका, ऐसे नजरअंदाज नहीं कर सकते! छोटी चींटी हाथी को कब पागल कर देती है, पता भी नहीं चलता है।“

21. ईमानदारी

नये साल का पहला दिन है। आज के दिन मन्दिर जाना मेरी आदत में है, मगर आज नहीं जा पाई। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैने पतिदेव से कहा, “आज आप शिव मन्दिर चले जाना।”

उन्होंने ‘हाँ’ तो कह दिया। अब उन्हें याद रहेगा या नहीं, यह तो दोहपर को ही पता चलेगा जब वो खाना खाने आयेंगे।

बालकनी में खड़ी थी, नीचे देखा समोसे वाले बाबा दो बाल्टियों में समोसे लिए खड़े थे। सोचा, मन्दिर वाला काम यहीं कर लिया जाये। नीचे गई, बाबा को सारे समोसों के पैसे दे दिए। एक साथ सारे समोसे बिकने की जो खुशी उनके चेहरे पर दिखी, वह बहुत अच्छी लगी।

मैंने उनसे कहा, “बाबा, एक काम करोगे?”

वे बड़े प्यार से बोले, “बोलो न बेटी?”

मैंने कहा, “बाबा, शिव मन्दिर यहाँ से थोड़ी ही दूर है, वहाँ जाकर ये सारे समोसे बाँट दोगे क्या?”

वे बड़े आराम से बोले, “हाँ, जरूर!”

बाबा के जाने के बाद मन में चिंता उपजी– ‘गरीब आदमी है, पता नहीं समोसे बाँटेगा भी या नहीं। कहीं और जाकर बेचने ही न लग जाए। पता नहीं पतिदेव को मन्दिर जाना याद रहेगा भी कि नहीं।’

करीब तीन घंटे बाद पतिदेव घर आए। उनके हाथ में कागज की एक पुड़िया थी।

मैंने पूछा, “ये क्या है?”
वे बोले, “आज शिव मन्दिर पर एक गरीब बुजुर्ग समोसे बाँट रहे थे। मैंने लेने से मना भी किया, पर वे नहीं माने।”

वह समोसा देखकर मुझे जो खुशी मिली, उसको बयान करने के लिए शब्द नहीं हैं मेरे पास।

22. हालत

यूनिवर्सिटी में भाई-भाभी प्रोफ़ेसर हैं, और वहीं उनका आवास भी है। मेरी भाभी मेरी बचपन की सखी है। हम दोनों राज्य-स्तर के खिलाड़ी रह चुकें हैं।

यूनिवर्सिटी के कैम्पस में बहुत बड़े क्षेत्र में घूमने की जगह है। उच्च शिक्षा के बावजूद भाभी, भैया से पूछे बिना कोई काम नही कर सकती। आज मैंने भाभी से ज़िद की, “चलो ना, अपने ट्रेक सूट निकालो हम सुबह दौड़ लगाकर आतें हैं।“

भाभी ने कहा-“ एक बार इनसे पूछ लेते हैं। मैंने शादी के बाद आजतक ट्रेक सूट नहीं पहना है। ये नाराज़ न हो जाये।“

-“अरे, कुछ नहीं होगा, हम सुबह-सुबह दौड़ लगाकर आ जायेंगे।“ मेरी ज़िद के आगे भाभी झुक गई।

हम ननद- भाभी ने अपने ट्रैक सूट निकाले और सुबह-सुबह सैर को निकले।

इतने समय बाद हम दोनों साथ दौड़कर बहुत ख़ुश थे। लौटते समय घर के बाहर भैया खड़े थे।

हमें देखकर चोंक गये। भाभी की तरफ़ नाराज़गी से देखते हुए बोले-“ थोड़ा तो लिहाज़ कर लिया करो! ये भी सिखाना पड़ेगा क्या?”
भाभी निरुत्तर थी। जवाब मैंने दिया-“ भैया, यही शब्द मेरे पति भी हमारे घर में मुझसे कहते हैं।“
23. इजाज़त

एक महीने पहले गौरी हमारे दफ़्तर में आई। बेहद सीधी, सरल, सादगी से रहने वाली। कम बोलने वाली गौरी को आज हम सबने खाने की मेज़ पर घेर ही लिया।

-"तुम इतनी सिम्पल क्यों रहतीं हो?"

-"थोड़ा तो स्टाइलिश रहा करो!"

-"तुम्हें फैशन की आज़ादी नहीं है क्या?"

-"मुझें तो मेरे पति स्लीवलेस के अलावा सब पहनने देतें हैं।"

-"बस, कपडों के रंग इनकी पसन्द के पहनने पड़ते हैं बाकी तो कोई बंधन नहीं है।"

-"मैं तो जो चाहे करूँ इन्होंने मुझें हर चीज़ की छूट दे रखी है।"

गौरी हम सबकी बात मुस्कुराते हुए आराम से सुन रही थी; इत्मिनान से बोली- "मैं जो चाहे वही करतीं हूँ। मेरे पति मुझे किसी बात की इजाज़त नहीं दे सकते।"

24. ताकत

हम मीडिया वाले अपना सर्कुलर बढ़ाने के लिए क्या नही करते हैं!

मसाले के बगैर कुछ चलता भी तो नही! खबरों में बने रहने के लिए सब करना पड़ता है।

अपने फायदे के लिए दूसरों का नुकसान भी किया, आज पैसा और नाम किसे नही चाहिए?

कुछ दिन पहले, 5-6 बच्चों के साथ बुज़ुर्ग सैनिक हमारे दफ़्तर में आये।
वो कहने लगे- "हमारे पास देने को कुछ भी नहीं है। न ही हमारी खबर में कुछ बड़ा! बस! हमारी ज़रूरत बड़ी है, पर हाथ ख़ाली! जिस बस्ती में, मैं इन बच्चों को पढ़ाता हूँ। वहां शाम को लोग आ कर बोतल ,बीड़ी सब छोड़ जाते है। सुबह हम सफाई कर के पढ़ लेते थे। पर आजकल वो लोग दिन में भी वही होते हैं। अब ये बच्चे कहाँ जाये? उनको समझाया तो मारपीट पर उतर आये और उन बुजुर्ग ने अपनी बाँह पर चोंट के निशान हमें दिखाये। साहब, आप खबर छाप दो तो हमारा काम बन जायेगा। आप तो जानते हो एक खबर न जाने कितनों को जगा देगी। इन बच्चों का भला हो जायेगा। हमारी कोई नहीं सुनेगा। इनकी शिक्षा बीच में ही छूट जायेगी।"

अगले दिन फोटो के साथ खबर की ताकत, और अंजाम?
कागज़ के लिफाफे में पेड़े इतने मीठे कभी नही लगे

25. मूक विद्रोह

तेज़ बारिश हो रही है कोई बात नही पिंकी बेबी से वादा था आज उन्हें समोसे बना कर खिलाने थे। साल में एक बार ही तो आ पाती है बिटिया। जिसे बचपन से हाथों से खिलाया हो उसमें और अपने बच्चे में कैसा फर्क?

आज मेरी पोती को भी साथ ले जाना पड़ा। बहू अस्पताल गई है अपनी माँ के पास।

एक हाथ में 3साल की पोती और एक हाथ में छतरी लिए मैं जब वँहा पहुंची मुझे देखते ही मेमसाहब बोली "अरे शीला थोड़ा बाहर खड़ी हो जा, चौका गीला हो जायेगा।"

कैसी सोच है? हम दोनों को भीगा देखकर तौलिया या एक कप चाय का कहने की जगह?

चलो छोड़ो इनका तो स्वभाव ही ...अम्मा बाबा और बच्चों से लगाव के कारण ...नही तो छुट्टी और बारिश में कौन आता?

"अरे!शीला अपनी पोती को बोलो यहाँ बैठे, वो बाहर उस फूलदान को छु रही थी। पिंकी उसे लाई है। बहुत कीमती है।" मैडम ने चिढ़ते हुए कहा

मन तो खट्टा हो गया पर ...हम मालिक के बच्चे के लिए जो करे वो प्यार के और मालिक हमारे बच्चे के साथ ऐसा व्यहवार? इतने फालतू भी नही हमारे बच्चे।

इतने में बहुत ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ आई।
"कर दिया न नुकसान तोड़ दिया"

बाहर गई तो देखा पिंकी बेबी की बिल्ली ने वो फूलदान तोड़ दिया। मैं अपनी पोती का हाथ थामे चौके के दरवाज़े से ही सब देख रही थी।

मेमसाहब अब पिंकी बेबी पर नाराज़ हो रही थी।

"मैं कल समोसे बना दूँगी मेम साहब कहीं इस बच्ची से कोई नुकसान न हो जाये।"

उनके जवाब की अब ज़रूरत नही थी। पोती को उठाया और एक बार फिर बारिश में मै बाहर निकल पड़ी।

26. सीख

कई सालों से हर रविवार को सत्संग में जाती हूँ। बाद में कुछ देर रुककर बातें भी इसमें शामिल है।
बेटे की सगाई हुई है और अब बहू आने वाली है। तो बस उसीके बारे में बातचीत होने लगी।
हम सखियाँ और हमारी बातें! एक बोली- "खाने वाली को हटा दो नही तो फिर उसे काम की आदत ही नही पड़ेगी।"

-"अरे! पहले से ही सख्त रहना नही तो बाद में वो हाथ आने से रही।"

- "उसे काम पर जाने की क्या ज़रूरत है? सबकुछ तो है तुम्हारे पास!"

मुझे ज्ञान बांटा जा रहा था। हमारी बातें कोई और भी सुन रहा था। उन वृद्ध महिला ने मुझे इशारे से अपने पास बुलाया और बोली- "बेटी नये रिश्ते की शुरुआत कड़वाहट से मत करना। उसे दिल से अपनी बेटी की तरह प्रेम देना। जब पढ़ी लिखी बहू ला रही हो तो वो काम नहीं करेगी तो क्या करेगी? उसके साथ मिल कर चलो फिर देखना रिश्ता कैसा बनता है। तुम उसपर राज़ करो वो दौर अब नही रहा। हाँ, तुम उसके दिल पर राज़ करो ऐसा हो सकता है।"

इतने में उन महिला को लेने उनकी बहु आ गई।
-माँ चलो", कहकर उन्हें उठने में सहायता की और हाथ पकड़ कर वो सास बहु बाहर जाने लगी।
जाते जाते वो पीछे मुड़कर मुस्कुराई और आँखों से बोली "देखा"!

27. पापा सही थे...

"बेटी को 60 हज़ार और आने-जाने की लिए गाड़ी मिल रही है! कैसे पिता हो तुम खुश होने की जगह नाराज़ हो रहे हो?" उस दिन मेरा दिमाग सातवें पर था। मुझे वो नहीं दिख रहा था जो एक पिता देख पा रहे थे।

बहुत गुस्से में वो बोले थे- "पीहू कोई ऑक्सफ़ोर्ड से पढ़ कर नहीं आई है। जो उसे मिल रहा है वो उसे उसके रूप के कारण मिल रहा है जो उसकी योग्यता से बहुत ज्यादा है।"
पीहू भी सहम गई थी पिता का गुस्सा देखकर। पर मेरी बेवकूफी के साथ ने उसे पिता की बात का मर्म समझने ही नहीं दिया। और वो काम पर जाने लगी।

आज सुबह पीहू ने कहा,"माँ रात में एक पार्टी में जाना है। मैं ऑफिस से ही चली जाऊँगी। देर हो जायेगी तुम चिंता मत करना।"

पिता बोले, "मुझे जगह बता दो मैं लेने आ जाऊँगा।"

बड़ा गुस्सा आया मुझे, "अरे, वह अब कोई बच्ची नहीं है। फिर उसके साथ उसके बॉस रहेंगे ना! वह छोड़ देंगे।"

रात का एक बज गया है। पीहू नहीं आई। उसका फोन भी बन्द है। किसी और का नम्बर हमारे पास नहीं था। पीहू के पिता कमरे में चक्कर लगा रहे थे। बहुत बेचैन थे। मुझसे भी लेटा या बैठा नहीं जा रहा था। मैंने उनका हाथ पकड़कर कहा, "बैठ जाइये ना!"

उन्होंने मेरा हाथ झटक दिया। उनकी आँखों में गुस्सा था...कुछ बोले नहीं वो। मैं किसी अनिष्ट की आशंका से खुद को कोसने लगी।

थककर मैं कुर्सी पर बैठी ही थी कि पीहू आ गई। हमने चैन की साँस ली। रात ढलान पर थी। वह अपने कमरे में जाकर सो गई।

सुबह हुई तो पीहू मेरे पास आकर बोली, "माँ,पापा की बात सही थी, हम दोनों गलत।"

मैं घबरा गई। मैंने, उसकी आँखों में झाँककर कहा,"तू ठीक तो है।"

पीहू बोली, "एकदम ठीक, तुम्हारी बेटी इतनी कमजोर तो नहीं हो सकती। लेकिन अब यह नौकरी... बिलकुल नहीं। माँ पापा सही थे..."

मैंने देखा उसके पिता अखबार पढ़ते हुए मुस्करा रहे थे।

28. बेगुनाह

फूलों की वादियों में हम मिले। प्यार तो होना ही था। बहुत सादा उन्मुक्त जीवन है हमारा, कोई दीवारें और दिखावा नहीं है।

घने पेड़ पर हमनें अपनी दुनिया बसा ली। दोनों बच्चों के साथ हम सुखी थे।

दो दिन से माहौल ठीक नहीं है। हर तरफ़ बम, धमाकों की आवाज़ आ रही थी। उसी के डर से हम सहमे हुए थे। अपने घरौंदे से बाहर नहीं निकले थे।

आज सुबह से शांति है। बच्चों की भूख देखकर हम दोनों से रहा न गया। साथी बोला- "तुम बच्चों के साथ रहो, उनका ध्यान रखना! मैं दाना लेकर आता हूँ।"

जाने से पहले साथी ने बच्चों को दुलार किया। मैंने उसके कंधे पर अपनी गर्दन टिका दी।

शाम होने को है, साथी लौटा नहीं...मेरा दिल डर रहा है। अचानक देखा वो सामने से आ रहा है। बच्चे भी उसको देखकर फुदकने लगे। वो कुछ दूरी पर ही था कि एक धमाका... वो गिर गया! पेड़ दहल गया! मैं और बच्चें भी ज़मीन पर... मैं सांस भी नहीं ले पा रहीं हूँ।

हमनें तो कभी कोई दीवार नहीं बनाई, कोई आतंक नहीं फैलाया, फ़िर मेरे परिवार को किस गुनाह की सज़ा...?

29. मेहफ़ूज़ (बचपन)

"कितनी बार मना किया उस बुड्ढे के पास मत जाया करो!"
"तुमसे कहा ना, वो सामने वाले अंकल के पास क्यों नही जाते?"

ऐसी ही आवाजें मुझे मेरे पास वाले फ्लैट से आती रहती है।

पास के घर में पाँच साल का बच्चा "सनी" मेरे अकेलेपन का साथी है।

आज पहली बार मुझे सनी के घर जाना पड़ा। दरवाज़ा खोलते ही उसकी माँ ने कहा-"सनी तो नही है।"

मैने कहा -"मैं जानता हूँ, इसीलिए अभी आया हूँ।"

वो फिर भी दरवाजे पर ही खड़ी रही मजबूरन मुझे ही कहना पड़ा-"बेटी, बैठ कर बात कर ले क्या?"

उसने बेमन से कहा-"जी, आइये!"

मैंने अपनी बात शुरू की- "बेटी, मैं जानता हूँ; आप सनी को मेरे पास भेजना पसन्द नही करती हो, क्या करूँ मेरे पास महंगे तोहफे के लिए पैसे नही है। एक चॉकलेट भी नही दे पाता हूँ उस मासूम को, पर वो मेरे पास मेहफ़ूज़ और खुश रहता है। मुझे ये बताते हुए बहुत ग्लानि हो रही है की सामने वाले घर जहाँ आप उसे भेजना पसन्द करती हो वो साहब उसके साथ ग़लत हरक़त करते हैं। कल ये उसने मुझे रोते हुए बताया इसीलिए वो उनके पास जाने से घबराता है पर आपके डर से उसे जाना पड़ता है।"

मेरी बात सुनकर सनी की माँ की आँखों में आंसू आ गए। वो बेहद नफरत से बोली-"ऐसा गन्दा काम वो भी एक..."
अपनी जेब से एक चॉकलेट निकालकर उसे देते हुए मैने कहा-"बेटी, सनी का बचपन अनमोल है उसे कोई कुचल दे उसके पहले आपका जागना ज़रूरी है।"
भारी मन से अपने घर लौटा। इस कशमकश में आंख लग गई कि अब सनी मेरे पास आएगा कि नही।

शाम को सनी दौड़ता हुआ मेरे पास आया और बोला-" दादू, आज तो माँ ने तुम्हें दादू कहा और कह रही थी कि अब कभी भी सामने वाले के घर मत जाना। मेरे गले में बाहें डालकर वो मुझसे लिपट गया।

30. कुछ नया

घर में घुसते ही पति ने कुर्ता उतार कर फेंका और चीखते हुए बोले-"क्या ज़रूरत थी घर की बात बाहर बताने की, सच बोल कर क्या मिल गया तुझे?"

मैने ठंडी आवाज़ में कहा-"झूठ के नुक़सान आप नही समझ पायेंगें।"

-"ज्ञानी तो, तुम हो ही चुकी हो! किचन क्विन जो बन गई हो, दिमाग घूम गया था तुम्हारा। टी.वी. पर जब पूरा देश देखे, तो पैर ज़मीन पर हो ही नही सकते है।"

-"इसमें घमंड जैसी कोई बात नही है।बस, एक ग़लतफ़हमी दूर करना ज़रूरी था।"

-"यही कि तुम बहुत दुखियारी औरत हो।"

-"बिल्कुल नही, कुछ दुखियारी औरतों को ये कहना जरूरी था की पति की मार खाकर, सास के ताने और ज़ुल्म सहकर भी अपने हुनर के बल पर यहाँ तक पहुंचा जा सकता है।"

-"पूरी दुनिया के सामने मेरा और मेरी माँ का अपमान करके मिल गई शांति? बहुत बड़ा काम करके आ गई ना?"

-"मेरी तरह घुट-घुट कर जीने वाली हर औरत को ये सुनकर हिम्मत मिलेगी कि किसी औरत का साथ उसका पति नही कभी-कभी दुःख भी देता है।"

31. करीब

-"बेटा स्पेन से आ रहा है। तुम हो कि ये सारे झंझट ले कर बैठ गई। पूजा हम बाद में भी रख सकते थे। आजकल के बच्चे इन सब बातों को नहीं मानते है।" मेरे पति मुझसे कहने लगे।

-"साहिल ने बहुत मेहनत की और आज वो यहाँ पहुँचा है। मैंने भी उसके लिए बहुत दुआएँ मांगी थी। ईश्वर को धन्यवाद तो देना है ना? ये पूजा उन मन्नतों का शुक्रिया है। तुम बेटे से इतना डरते क्यों हो? जिस बेटे को अपनी सांसो पर पाला क्या वो माँ के साथ एक घण्टा पूजा में नही बैठ सकता? अच्छा ही तो है, मेरी मन्नत भी उतर जायेगी और वो क्या सोचता है ये भी पता चल जायेगा आगे से ध्यान रखेंगे।" मैंने दृढ़ता से जवाब दिया।

कमरा साफ करते हुए मैंने कहा-"वैसे भी वो किस देश में रहता है? किस पद पर कितना कमाता है? इन सबसे हमारे प्रेम में क्या फर्क पड़ता है? उसके लिए दुआएँ ही मेरा जीवन है।"

साहिल मेरे साथ पूजा की थाली सजा रहा है। ज़मीन पर हम माँ बेटे पास-पास बैठे हैं, उसका हाथ मैंने अपने दोनों हाथों में ले लिया। साहिल ने पूछा-"क्या हो गया माँ?"

मेरे आंसू उससे छुप न सके।

उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोला- "हम ऐसे ही साथ में हमेशा काम करेंगे जैसे बचपन में करते थे। माँ, मैं तुमसे दूर हूँ तुम्हारे दिल से नही।"

दूर से मेरे पति मुझे देख रहे था। उनकी आँखे कह रही थी। साहिल तुम्हारे हमारे करीब है और रहेगा।

32. ताज़ा

बहु को आये कुछ महीने ही बीते, पर उसने पूरा घर सम्हाल लिया।

मिठाई हो या फल, सब्ज़ी घर में बहुत आती है। कुछ तो पति को आदत ही है जब भी घर आते कुछ न कुछ खाने का सामान ले आते। कुछ हमारे खेत व बगीचे से भी फल, अनाज आता रहता।

मुझे भी घर के नौकरों को खिलाना अच्छा लगता है; पर बहु जो आजकल कर रही है वो बर्दाश्त नही होता।

आज भी खेत से अमरुद आये उसने कमला को उठा कर दे दिए।

अचानक मेरे मुँह से निकल गया-"अरे, अभी तो आये है अमरूद पहले ख़ुद तो खा ले फिर , दे ही देंगें।"

बहु ने बड़े इत्मिनान से जवाब दिया-"माँ, खाने का सामान इतना आता है कि एक चीज़ खत्म नही होती की दूसरी आ जाती है। बाबूजी भी हमेशा यही कहते है कि सबको दे दिया करो।"

-" अरे, तो मै क्या देती नही? "मैने थोड़ा चिढ़कर कहा।

-" माँ, आप देती है पर चार-पाँच दिन बाद उसकी जगह सब एक साथ ताज़ा खा ले तो क्या बुराई है?"

बहू की बात समझने और स्वीकारने में बस एक पल लगा। मैने भी मन को ताज़ा करते हुए कहा-" तेरी बात सही है बेटा, ताज़गी ही बेहतर है!"

33. औकात

बचपन में साथ खेले बड़े भाई से मुझे बहुत प्रेम था। बहुत दयालु मन था उनका। एक बार वे एक पत्ते पर दो चींटियों को पानी से बाहर निकाल कर लाये तो मैने उन्हें फूँक मारकर उड़ा दिया था। तब भैया बहुत रोये थे।

बोले- "वो दोनों बिछुड़ गईं। तूने ये क्या कर दिया?"

हम दोनों के व्यापार अलग-अलग थे। भाईसाहब ने व्यापार में बहुत तंगी देखी। मैंने हमेशा उनकी सहायता की। कभी छः महीने तक तो कभी साल-दो साल तक वो पैसे वापिस नही कर पाते थे। पर मैंने कभी कुछ नही कहा। उनका कोमल मन मैं कभी नही भूल सकता था।

आज वक्त का पासा पलट चुका था। भैया अमीर हो गये और हम तंगी में आ गये। बड़ी आस लेकर उनसे मिलने गया। अपनी बात बड़े भरोसे से शुरू की, "भैया, अपना घर बेचकर आपके व्यवसाय में पैसे लगा देता हूँ। आपको भी बाहर से पैसा नहीं उठाना पड़ेगा और हमें भी सहारा मिल जाएगा। अपने भतीजे को आप अपने साथ रख लो भैया!" मुझे भैया से दिलासा की उम्मीद थी।

भैया बोले- "उधार और भागीदारी का फ़र्क तो समझ छोटे!" कल की सहायता को इस तरह तो मत भुनाओ!"

मैंने ठंडी आवाज़ में कहा- "भैया, बिना ब्याज का पैसा कभी कम, कभी देर से तो कभी आपने दिया भी नही, पर मैंने कभी कुछ नहीं कहा। आज मैं भी आपकी तरह तकलीफ़ में हूँ।"

भैया ने उसी लहज़े में कहा-" दिखा दी ना औकात!"

मेरे मुँह से भी निकल गया-"किसने भैया?"

34. सफाई की पाठशाला

गाँव में सब-कुछ तबाह हो गया!भाई जो शहर में ड्राइवर है उसके पास आना पड़ा।अब यहाँ रहना है, तो काम तो करना ही पड़ेगा। इसीलिए भाई के साथ काम की तलाश में घूम रही हूँ।

चौथे घर की मैडम के आने से पहले भाई मुझपर नाराज़ होते हुआ बोला- "आँगन बाड़ी में काम करके तेरा दिमाग ख़राब हो गया है! ये गावँ नही बड़ा शहर, और बड़े लोग है।"

-"जी, भैया!"

-"क्या जी भैया! तीन घर काम करने को मना कर चुकी है अब ये चौथा घर है।इनको ज़्यादा नियम मत सिखाना!"

सामने से मालकिन ने आते ही कहा-"क्या नाम है तुम्हारा?"

-"जी कमला"

-"सुबह की नौ बजे से शाम की सात बजे तक रुकना होगा! घर का झाड़ू, पोंछा, बर्तन, कपड़े सब करना है।दोनों समय का खाना भी।बड़ी बेटी दो बजे व छोटी चार बजे आएगी उसको खाना देकर तु भी खाना खा लेना।"

-"जी मैड़म जी"

-"सफाई का पूरा ध्यान रखना कमला!हाथ धो कर ही खाने की चीज़ो को छुना, बाल बाँध कर रखना, रोज़ नहा कर ही आना।खाना हमेशा ढ़क कर

रखना, शाम को खिड़कियां बन्द कर देना नही तो मच्छर आने लगते है। तनख्वाह सात हजार ठीक है क्या?"

-"बिल्कुल ठीक है मैडम जी! बस एक बात पूछनी है।"

-"बोलो ना क्या बात है?"

-मुझे घर में ही शौचालय मिल जायेगा ना?"

एकदम चौकते हुए वो बोली-"क्या! वो तो इस घर में अलग से नही है उसके लिए तो तुझे बाहर जाना पड़ेगा।"

मेरे कुछ कहने से पहले ही मेरा भाई ज़मीन पर बैठ गया, सर पर हाथ रखकर!

35. दूसरे की माँ

"अजब इंसान है तू! तुझमें थोड़ी-बहुत इंसानियत भी बची है या नही? …तुझे अपनी अपाहिज़, बीमार माँ से मंदिर और पूजा की ज़्यादा चिंता है। माँ का ज़रा भी ख़्याल नही…?" मेरा दोस्त श्याम एक साँस में सब कुछ कह गया।

मैंने थकी-सी आवाज़ में कहा, "माँ की चिंता है तभी तो एक पुजारी का इंतज़ाम करने के लिए भटक रहा हूँ। जो मेरे पीछे त्यौहार के समय मंदिर को संभाल ले।”

अपने आँसू पीते हुए मैंने बात आगे बढ़ाई, “ ये मंदिर की नौकरी ही तो हमारी रोज़ी-रोटी है। ये चली गई तो मैं माँ के साथ सड़क पर आ जाऊँगा…मुझे अपने कैंसर के इलाज़ के लिए शहर जाना है।”

दोस्त को सोच में पड़ा देख मैंने आगे कहा, “और ये सलाह माँ ने ही दी है दोस्त, कि कोई मंदिर संभालने को मिल जाये तो तू शहर चला जा…एक बार नंबर चला गया तो फिर पता नही कब लगे?

“हाँ यार, ये समस्या तो है। तुम अकेले ही हो माँ की देखभाल करने वाले।” श्याम बोला।

“…और यदि मैं भी न रहा तो..."

श्याम ने मुझे रोककर मेरा हाथ थाम लिया, "तुम चिंता न करो, मैं घर और मंदिर दोनों संभाल लूंगा…हमारे मंदिर को पिताजी देख लेंगें।"

मैंने खुश होते हुए कहा, "अपनी माँ को तो सभी संभालते हैं, पर दूसरों की माँ को संभालने वाले बहुत कम हैं। तुमने मेरा बहुत बड़ा बोझ उतार दिया श्याम।"

एक दर्द भरी मुस्कान के साथ वह बोला- "अब तो अपनी माँ को संभालने वाले भी कम हो रहे हैं दोस्त!"

36. इंद्रधनुष

तीन भाइयों की एक बहन हूँ। हम सबकी शादी हो चुकी है। माँ- बाबूजी की शादी की सालगिरह मनाने के लिए हम सब इकठ्ठे हुए थे।
बहुत बड़ी पार्टी थी। हम सब उनके लिए उपहार लाये थे।

आज सबको विदा होना है। माँ अपना कमरा बन्द करके सबके लिए उपहार और लिफाफे बना रहीं हैं।

बड़े भैया पैसे में सबसे कमज़ोर व छोटे भैया सबसे बेहतर हैं। बीच वाला ठीक-ठाक है तो माँ के उपहारों व पैसों का वज़न भी वैसा ही होता जा रहा है। जिसे देखकर बाबूजी भी मेरी तरह विचलित हो रहें हैं।

माँ ने मुझे लिफ़ाफ़े पकड़ाये और बोली-" उमा, इनपर तीनों के नाम लिख दे! उनको कमरे में जाकर ही दे आती हूँ। बाबूजी की मूक सहमति के बाद मैंने कहा-" माँ, ये क्या? तीनों में इतना फ़र्क? ये ठीक नहीं है!" माँ तपाक से बोली-" क्या करें? जिसकी जैसी हालत उसने वैसा दिया। तो हम भी वही कर रहें हैं।" एक कसक से साथ अचानक मुँह से निकल गया-" माँ, बड़ी भाभी- भैया के बड़प्पन को पैसे से मत तोलो। भैया के कारण ही दोनों छोटे भाई और मेरी पढ़ाई हो पाई है। आज वो दोनों आपको जो सेवा और सम्मान दे रहें हैं। उसमें फ़र्क लाने के लिए ये गणित काफ़ी है।"
-" तो तीनों को एकसा कैसे दे दें?"

-"क्यों नहीं?! तुमनें बचपन में हम सबको एकसा ही सीने से लगाया था। तो आज क्यों नहीं?"

बाबूजी बोले-“ उमा सही कह रही है! आज ये बदलाव क्यों?”

-“ माँ, बड़े भैया को देखकर ही दोनों छोटे नम्र हैं। कल वो बदले तो क्या होगा पता नही? ये लिफ़ाफ़े के अलग-अलग रंग प्रेम का रंग भी बदल देंगें। इसकी शुरुआत तुम कर रही हो। फिर दोष किसी को मत देना!” माँ के हाथ वहीं के वहीं रुक गए। बोली-“ला, लिफ़ाफ़े वापस कर!”

 शाम को विदा का समय आ गया। मेरा और बाबूजी का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा। जब माँ ने रुपये बाबूजी के हाथ में पकड़ाए और उपहार मेरे हाथ से सबको दिलवाये। गिरगिट अंदर दम तोड़ चुके थे। बाहर इंद्रधनुष जगमगा उठे।

37. रीत

जबतक पति जिंदा थे; दोनों बेटे-बहू मेरा बहुत लिहाज़ करते थे। बेटी की शादी हमनें बड़ी धूमधाम से की थी। दो गाड़ियां, गहने, उपहारों की कोई कमी नही रखी थी। पिछले दो सालों से बेटी बहुत तकलीफ़ में है। दामाद की लंबी ख़र्चीली बीमारी, बच्चों की महंगी पढ़ाई ने उनके व्यापार की कमर तोड़ दी है।

त्यौहार के नाम पर बेटी को जो उपहार दोनों बहुएं दे रही है उसके आगे बेटों की मौन स्वीकृति ने मेरे मन को आहत कर दिया है। आज बड़ी बहू बहुत घटिया कपड़े ले कर आई तो छोटी उससे भी आगे निकली बोली- “मम्मी जी, कपड़े की पसंद सबकी अलग-अलग होती है। हम सिर्फ़ मिठाई ही भेज देते हैं।“आज मेरे सामने ये हाल है तो मेरे बाद क्या होगा ये सोचना तो बेकार ही होगा।

आज भी घर में ज़ायदाद काफ़ी है पर बेटों की नियत बदल गई है।

मैंने वक़ील को घर बुलाया और ज़ायदाद का एक हिस्सा बेटी के नाम करने का निर्णय ले लिया।
शाम तक दोनों बेटों को ये ख़बर मिल गई।

दोनों बेटे-बहु और पोता, पोती मेरे कमरे में मेरे सामने खड़े हैं। बड़े बेटे ने बात शुरू की वो नाराज़गी के साथ बोला-“ माँ, दीदी को ज़ायदाद में से हिस्सा देने की क्या ज़रूरत है? हमनें बहुत महंगी शादी की थी। आज भी हम निभा तो रहें हैं। कुछ करने से पहले ज़रा इन बच्चों का तो सोचा होता।“

बेटे की आंखों में देखते हुए मैंने कहा-“बेटे, जैसे आज मैं अपनी बेटी के लिये सोच रही हूँ; कल तू भी अपनी बेटी के बारे में सोचना! उसे आज हमारे साथ की सख़्त ज़रूरत है। बेजान रीति-रिवाज़ो में जान ड़ालने का चलन हमें ही ख़त्म करना होगा। अब हक़ को ही रीत बनाने का वक़्त आ गया है ।“

जवाब सुनते ही मेरे बेटे का हाथ पोती के सर पर चल गया।

38. अपने लिये

सेठ धन्नामल के यहाँ बीस सालों से गाड़ी चला रहा हूँ। कई गाड़ियां आई और दूसरे चालक भी पर मालिक की मर्सिडीज तो मैने ही चलाई है।

आज रात के एक बजे फोन आया -"रघु, दो जोड़ी कपड़े लेकर आजा बाहर जाना है।"

"रघु, बेटे-बहु को लेकर नासिक चला जा।" मुझे देखते ही मालिक बोले।

"क्या बात है? क्या हो गया एकदम अचानक!?"

"अरे, अचानक ही तो हुआ है तब ही तो जाना है।"

"पर बाबूजी कल तो मेरी बेटी की शादी है।"

"शादी...! यहाँ जो आफ़त आ गई है वो दिख नही रही है क्या?"

"एक जगह बात हो गई है इन नोटों को पीले में बदलना ज़रूरी है। वहां अपनी पहचान है। तू तो जानता है ये काम तेरे सिवा किसी और के साथ नही हो सकता।"

"पर बाबूजी मेरी दिव्यांग बेटी को, उसकी शादी के दिन छोड़कर कैसे बाहर जा सकता हूँ? आप जानते है सिर्फ़ मेरे होने वाले दामाद का परिवार ही तो आ रहा है। ऐसे में उनको..."

"ये इक्कीस हज़ार और ले। तेरे बेटे को बता दे आकर ले जायेगा।" मालिक ने हज़ार की गड्डी में से इक्कीस नोट अलग करते हुए कहा

"नही बाबूजी पैसे की कोई ज़रूरत नही है। बस, एक फोन करके बेटे को बता दूँ कि हम जा रहे है।"

बड़े-बड़े चार सूटकेस जो उठाये नही उठ रहे थे। उनको उठाकर किसी तरह गाड़ी में रखा ही था कि पुलिस की गाड़ी का सायरन सुनाई पड़ा। कब तक सिर्फ इनका ही काम करेंगें? कभी तो अपने लिए भी...

39. गायब

सरकारी अस्पताल के जनरल वार्ड में, मैं मरीज़ो को देख रही थी।

एक साथ महँगे कपडों में महकती कई महिलाएं आखिरी पलंग पर लेटी जानकी के पास गई और एक साथ बरसने लगी-"कैसी निर्दयी माँ हो तुम! "ज़रा भी दया नही आई दो दिन की बच्ची को कूड़े में फेंकते हुए!"

"माँ का दिल तो इनके पास सिर्फ बेटे के लिए ही होता है।"

"दो दिन की बच्ची को मारने के लिये कलेजा चाहिए, कहाँ से ले आती है, ये ऐसा दिल?"

"अरे, आप लोग दूर हटे! ये सब कहने से पहले इससे इतना तो पूछ लीजिये की ये सब क्या इसी ने किया है?"

जानकी अचानक हुए इस हमले से घबरा गई। दूर से ये सब सुनकर मै उनके पास गई ।

"ज़रा देखिए, जानकी की पहली बेटी का हाल! इसके पति ने इस बच्ची को भी तीन बार मारने की कोशिश की ये बच्ची जिंदा तो बच गई पर अपंग हो गई। दूसरी को मारने में वो कामयाब हो गया। रात को नींद में कब उठा कर चला गया; पता ही नही चला।"

जानकी की आँखों से आंसू गिर रहे थे। उसने रोते-रोते कहा- "मैडम जी, उस राक्षस के साथ रहना मजबूरी है। छत और रोटी वही देता है। जो गई उसका तो कुछ नहीं कर सकती पर जो साथ है उस बेटी के लिए कुछ कर दीजिये! इसकी जान को भी ख़तरा है। मैं उस घर फिर कभी नही जाऊँगी। अब न कोई बच्ची पैदा होगी न मारी जायेगी।"

आवाज़ और ख़ुशबू सब गायब हो गई।

40. असली चोर

चालीस महिलाओं का किटी समूह, हम सब स्वल्पाहार गृह में एकत्रित हुए।

साथ में खाना, तम्बोला, और खेल का दौर चलना था।

सबने अपने पाँच-पाँच हजार रूपये निकाले। रजिस्टर में नाम लिखा जा रहा था।

पता नही गलती कैसे हुई, पर एक सदस्य के पैसे कम आये। सबसे पूछा, कई बार जांचने के बाद भी समझ नही आ रहा था, गलती कैसे हो गई?

अब बहस का दौर शुरू हुआ जो रोने- धोने तक चला गया।

रूपा बिफर रही थी - “इस तरह बार-बार पूछने का क्या मतलब है?” मैने तो अपने पैसे दे दिए। ये तो तुम मेरा अपमान कर रहे हो।“

मोना ने नर्म लहज़े में कहा- “मुझे जहाँ तक ख्याल है... आपने पैसे शायद नहीं दिये है।“

“अरे, याद करो! हज़ार के पाँच नोट दिए तो थे मैंने। मुझे क्या समझा है, आपने? पैसे न देकर झूठ बोलूंगी! ये पाँच हज़ार लगते क्या है, इससे ज़्यादा का तो मेरा..." रूपा चढ़ बैठी ।

" हे,भगवान, गलती हो गई जो आपसे पूछा, अब ये नुकसान कौन भुगतेगा?" मोना को आज यहाँ कैशियर बनना भारी पड़ गया।

खिटपिट करते हुए सब, अपनी कुर्सी छोड़कर, खाना खाने के लिए टेबल तक चले गए।

मेरी नज़र शीतल पेय और नाश्ते के खाली बर्तन समेटते हुए उस किशोर पर ठहर गई। स्कूल जाने के उम्र में यहाँ, ऐसे ...? ओह !

"ज़रा नज़र रखना! हमारे पर्स वहीं रखे है, जहाँ वो लड़का बर्तन उठा रहा है।" रूपा की फुसफुसाहट को मैंने सुन ले ।

"एक तरफ गहने, रेशमी परिधान में लिपटी हुई चोरनी और दूसरी तरफ मुसीबत का मारा गरीब, जिसे चोर कहना कितना आसान है!” मेरा दिल भर आया।

41. समझदार

कॉलोनी के बगीचे में मेरी बेटी मेरे पास दौड़ती हुई आई और दुखी स्वर में बोली-"माँ, शीला आंटी अच्छी नहीं है"।

"अरे,ऐसे नही बोलते मिनी, क्या हो गया है? मैंने उसे समझाते हुए पूछा।"

मिनी ने चिढ़ कर कहा-"जब तुम बीमार होती हो और मैं तुम्हारी जगह इनके घर काम पर जाती हूँ तो ये मुझसे प्यार से बात करती है। आज इनकी बेटी ने मेरे नम्बर पर मुझसे झूला ले लिया और कहती है-"इसे दूर करो, हम इनके साथ झूला नही झूलेंगे।"

मैंने उसे समझाते हुए कहा- “तू बाद में झूल लेगी तो छोटी तो नहीं हो जाएगी ना? क्या फ़र्क पड़ता है?”

उसने आंखों में रोष के साथ कहा- “माँ, छोटे हैं तभी इनके घर काम पर जाते हैं। पर यहाँ तो हम सब बराबर हैं!”

42. सुकून

सूने रास्तों पर गाड़ी चलना और अपनी पसन्द का संगीत सुनना मेरा शौक था। अब उसकी जगह ले ली डर ने, सावधानी ने।

मेरा ऑफिस शहर से करीब बीस किलोमीटर दूर है। पहले तो मैं अकेली ही जाती थी पर आजकल का माहौल...अब ड्रॉयवर के साथ जाती हूँ। कभी सड़क पर बच्चे छोड़ कर बैठ जाने के किस्से तो कभी कार के शीशे पर अंडे फेंक कर लुट...इन सब के नीचे इंसानियत और सुकून...

आज भी गाड़ी अपनी गति से जा रही थी कि मैंने देखा सड़क के किनारे कोई गिरा..."अरे, विजय गाड़ी रोक! पीछे कोई घायल...(मेरी बात पूरी सुने बिना ही)विजय बोला-"मैडम, हमें क्या करना? साहब कहते है ना! ध्यान से ..."

मैंने चिढ़कर बोला-"कोई जख़्मी है! जानकर अनजान बनना भी तो ठीक नहीं!"

विजय मुझे समझाने के मूड में नही था फिर भी बोला-"मैडम, मैं अकेला क्या कर सकता हूँ? यदी वहां गुंड़े छिपे हो तो?"

मैंने सोचा (बहादुरी में मेरी कोई गिनती ही नही पर मेरे अंदर जो झांसी की रानी का दिल धड़क रहा है, उसका क्या?)

खुद को सम्हाला और मैंने कहा-"अब हम दूर आ गए है तुम गाड़ी साइड से करो कुछ करना पड़ेगा।"

बाहर सड़क पर खड़े हो कर सामने से आती बस को रोका। बस के अंदर जा कर जब सब को बताया की पीछे कोई घायल है मुझमें अकेले जाने की हिम्मत नही क्या आप सब मेरा साथ दे सकते है? बोलते-बोलते मैंने अपने हाथ जोड़ लिए- यदि आज उस घायल को छोड़ दिया तो जीवन भर ये दर्द " सबने एक साथ कहा -"आप परेशान न हो, हम सब चलकर देख लेते है।"

उफ़, सचमुच एक बच्चा था वो शायद स्कूल जा रहा था। बच्चे को अपनी गाड़ी में अस्पताल ले जाते समय का सुकून, मेरे जीवन का बहुत बड़ा सुकून था।

43. उऋण

माही ने कुछ मिन्नत करते हुए कहा- "रीया, चल ना! मॉल जाना है। एक उपहार खरीदना है।"

रीया ने हंसते हुए कहा-"तेरा तो कोई बॉय फ्रेंड नही है; किसके लिए उपहार?"

-"दो दिन बाद मदर्स डे है माँ के लिए कुछ लेना है।"

-"पिछली बार पैसे कम पड़ गए थे तो तू रोने लगी थी। इसबार क्या हाल है?"

-"इसबार सालभर पैसे जमा करें हैं। तू चल ! जल्दी कर।"

-"माही यार, पहले याद दिला देती तो मैं भी कुछ पैसे बचा लेती। कल ही तो साहिल का बर्थ-डे मनाया है। इटॅलियन रेस्त्रा में अब तो सब खल्लास! चल इसबार फोटो से ही काम चला लेंगे, माँ तो उससे भी ख़ुश हो जाती है। माँ की यही तो ख़ासियत है चार दिन बाद भी बधाई दो दुआएँ ढेर सारी मिल जाती है।"

-" रीया यही फ़र्क है समझ का, माँ से ज़्यादा समझने और करने वाला कोई नही। पिछली बार भी यही हुआ था तुमने रवि का बर्थ

डे मारवाड़ी रेस्त्रां में मनाया था तब भी माँ के लिए पैसे खत्म हो गये थे।"

-"क्या करें यार! तुझ जैसी मातृ-भक्ति मुझमें नही है। हमारी ज़िन्दगी में भी संघर्ष है। उन्होंने जो किया वो तो उनका फ़र्ज़ है। इसमें नया क्या है?"

- "रीया, बात समझने की है, वैसे नया ये है; बरेली से बाहर पढ़ने के लिए सिर्फ माँ ने तुम्हारा साथ दिया। एक बात और संघर्ष किसका बड़ा है, ये तय करना मुश्किल है। उस माँ का जिसने कभी अपने अरमानों के बारे में सोच ही नही जो पैसों का गणित हल करते-करते थक गई या हम, जो पैसे उन पर ख़र्च कर रहे है जो हमारे लिए...चल छोड़ तु अपना मन ख़राब मत कर मैं अकेली ही जा रही हूँ।"

- "माही रुक, एक सौ की नोट बची है। माँ के लिए कुछ चूड़ियाँ तो आ ही जायेगी वो तु क्या कह रही थी? माँ के ऋण से उऋण...."

44. मन किसका मैला?

हम सात महिला मित्र ऑफिस में दोपहर का खाना साथ में खाते है। आज जब मैं टेबल पर पहुँची तो सबकी आँखों में गुस्सा था।

सरला एकदम से फट पड़ी-"प्रभा, यार क्या ज़रूरत थी उस नीरु को पार्टी में बुलाने की? उसके बारे में क्या जानती हो तुम? पता है, उसकी माँ क्या थी? ये जिस कस्बे से आई है वहां एक संस्था चलती है, एड्स वाले रोगियों के लिए और इसकी माँ भी वहीं रहती है। नीरू का पद बड़ा है तो क्या? हमसे मक्खन नही लगेगा।"

इन सबकी सोच ने मन दुःखी कर दिया। मैंने थकी हुई आवाज़ में कहा-"मैनें किसी लोभ से उसे नही बुलाया वो नई और अकेली है बस यही सोचा था। उसकी मजबूरी, हालात हम कुछ भी तो नही जानते है। जिन हालातों में वो पली वहां पढ़ना आसान नही रहा होगा, वो भी चाहती तो उसी रास्ते पर चल सकती थी। उसने मेहनत का रास्ता चुना। उसकी माँ का जिस्म मैला हुआ तो क्या हुआ मन तो..."

सरला ने उबलते हुए कहा-"बस, हमें नहीं सुननी तेरी फिलॉसफी! घर, खानदान, इज्ज़त भी कोई चीज़ है।"

एक पल भी नही लगा मुझे निर्णय लेने में-"ठीक है, तो फिर दो लोग नही आयेंगे।"

नज़रें उठा कर बोलती तो लगता किसी को तंज दे रही हूँ। इसीलिए नज़रें झुका कर कहा- “यहाँ कम योग्यता के बावजूद ज़्यादा फ़ायदे के लिए जो कई लोग करते है उसका कोई नाम नही है पर उस काम को भी..."

45. आरज़ू

बाहर बहुत शोर हो रहा था; उससे मेरी नींद खुल गई। अम्मी भी घर में नही है।

घर के बाहर बहुत लोग इकट्ठा थे। एक औरत हाथ में कुछ लेकर सबसे बात कर रही थी। एक तरफ बड़ी से गाड़ी खड़ी थी।

अम्मी नहीं दिख रही थी पर मै लोगों की बातें सुनने के लिए भीड़ में घुस गया।

कोई बोल रहा था-"हमारे घर में खाने को कुछ भी नहीं है। हमें रोटी चाहिए।"

-"हमारे व्यापार का कितना नुकसान हो गया है। अब हमारा क्या होगा। हमें तो अपना काम चाहिए।"

-"हमारी गाड़ी और दुकान दोनों जल गए, अब हम कहाँ जाये? हम फिर से ये सब कैसे करेंगें? हमें भी सहायता चाहिए।"

जब सब लोग इतना कुछ माँग रहे है तो अम्मी कहाँ चली गई! मैंने भी उस औरत का हाथ थामकर कहा-"हमें भी कुछ चाहिए!"

वो बोली-" अरे बेटे, तुम तो बहुत छोटे हो, तुम्हें क्या चाहिए?"

-"हमारे अब्बू को गोली लगी फिर वो पता नही कहाँ चले गए हमें भी हमारे अब्बू वापिस चाहिए। आप हमारा भी काम कर दीजिये।"

पता नही कहाँ से अम्मी आ गई और मुझे गोदी में उठाकर, सीने से लगाकर रोने लगी और बोली-" वाहिद बेटे, ये तो सिर्फ़ बात करने आई हैं।"

46. तीर्थयात्रा

शिखर जी का पर्वत, हमारी आस्था का सबसे बड़ा स्थान। पूरे परिवार के बीस लोग थे हम, उस चढ़ाई के लिए।

शुरू में तो साथ थे पर बाद में सब अलग हो ही जाते है। कोई तेजी से आगे निकल जाता है तो कोई पीछे।

माँ के साथ मेरी बेटी आगे निकल गई। हम ऊपर मन्दिर में जाकर ही मिले।

मन्दिर में पहुँच कर जैसे ही मैं माँ से मिली तो वो बोली-"तुम्हारे बच्चे तो तुमसे भी ज़्यादा अच्छे है। गुल ने पूरे रास्ते मेरा हाथ पकड़कर रखा, मेरा बहुत ख्याल रखा। हमारे पास पैसे भी नही थे तो इसने पानी भी नही पिया। मैंने कहा भी हम रुक जाते हैं! पर ये नहीं मानी बोली-"नहीं नानी, रुके तो फिर आपके पैर दर्द करने लगेंगे। हम तो चलते है।"

माँ दुखी हो कर बोली-"मैने तो हमेशा शिखर जी की चढ़ाई बिना खाये-पीये की है पर आज इस बच्ची को भी मेरे कारण तकलीफ

उठानी पड़ी। मैं गुल को बहुत आशीर्वाद देती हूँ।" कहते-कहते माँ की आँखों में आँसु आ गए।

हम सब पहाड़ से उतर रहे थे। मैं गुल का हाथ थामे दौड़ रही थी। सबकी ख़ुशी के कारण अलग-अलग थे।

मेरी ख़ुशी! गुल वो सीख गई, जो मैं उसे सिखाना चाहती थी। आज माँ ने उसपर दुआओं की मोहर भी लगा दी। इससे बड़ी कोई तीर्थयात्रा है क्या?

47. साथ

आज से छः महीने पहले निशा को पता चला की उसकी बेटी के दिल में छेद है। डॉक्टर ने कहा था -"घबराने की ज़रूरत नही है; सुराख़ बहुत छोटा है उम्र के साथ अपने आप भर जायेगा।"

चार दिन पहले तान्या के नाक से खून बहने लगा और डॉक्टर ने कहा अब ऑपरेशन करना पड़ेगा। दस दिन बाद उसका ऑपरेशन है।

तान्या जो इस सबसे अनजान है। स्कूल की छुट्टी नही कर सकती, अपनी माँ से लड़ती है कहती है-"आप समझते नही हो! मेरी परीक्षा है मैं अभी छुट्टी नही लगा सकती।"

अब निशा उस मासूम को क्या कहे? उसके लिए इन दस दिनों तान्या को घर पर रोकना माने उसके दिल को दर्द देना ही होगा।

जब प्रिंसिपल मैडम को ये सब पता चला तो वो बोली-"ऐसा करते है, दो दिन के अंदर इन सब बच्चों की परीक्षा ले लेते है। परिणाम आने पर तो छुट्टी होनी ही है। ऐसा करो सब अभिभावकों को

डायरी में कारण के साथ पूरी बात लिख दो। बच्चों का रिविज़न हो जायेगा और तान्या आराम से ऑपरेशन करवाने जा पायेगी।"

अगले दिन तान्या के सारे नन्हे साथी तैयार थे, अपनी हाँ के साथ!

आज परीक्षा के परिणाम का दिन है। तान्या का नाम बोर्ड पर लिखा है वो कक्षा में तीसरे नम्बर पर आई है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ आये है। सब तान्या और उसकी माँ से मिलना चाहते है।

तान्या ने कहा-"माँ, थोड़ी देर रुको ना! हम झूला झूलकर आते है। कोई कुछ कहता उससे पहले उसके नन्हे साथी बोले-"नही, बाहर गर्मी है हम तो यहीँ बैठकर खेलते है।"

बच्चे खेल रहे है और हम दुआ कर रहे है! हमने तो तान्या का झूठ मूठ का साथ दिया पर ईश्वर इसका सच्ची वाला साथ..

48. कर्मठ

डाकिये की लापरवाही रोज़ की बात है। कभी डाक, पेटी में डालेगा तो कभी चौकीदार को पकड़ाकर और कभी तो हद हो जाती है जब वो रास्ते पर डाक फेंक कर चला जाता है।

घर-घर जाने का काम तो बस होली, दीवाली पर ही होता है।

आज भी यही हुआ, डाकिये ने डाक चौकीदार की तरफ उछाली और कहा-"रॉय साहब की है, सातवें माले पर दे देना।"

अभी उसने दो पैडल मारे ही थे कि बिल्डिंग में से कोई बाहर निकला, जो शायद डाकिये का परिचित था वो रुककर बात करने लगे। उस व्यक्ति के हाथ में मिठाई का डिब्बा था। जो उसे बात से पता लग गया की रॉय साहब के बेटे की शादी के कारण मिला है।

अब डाकिये ने साईकिल को स्टेण्ड पर लगाया, चौकीदार के पास गया डाक वापस ली और अब वो...

मै अपनी बालकनी से यह सब देख, उसकी कर्मठता पर मुस्कुरा...

49. तृप्ति

शीला मेम साहब के घर कई सालों से काम कर रही हूँ। सान्या बिटिया दूसरे शहर में पढ़ती हैं। इसबार दीपावली की छुट्टियों में घर आई। आज हम मेम साहब के कमरे की सफाई कर रहे थे।

उनकी अलमारी जमाते हुए सान्या बिटिया बोली-"माँ, कितने पुराने सूट रखें हैं! शांति को दे दो ना!" अलमारी जमाते-जमाते बिटिया ने कई सलवार-सूट एक थैले में अलग कर दिए।

इतने सारे सुंदर सूट आज घर ले जाऊँगी ये सोचकर मन ख़ुश हो गया। जब थैला भर गया तो मेम साहब बोली-" शांति, ज़रा एक बार दे तो मैं देख लेती हूँ। कोई सूट पसन्द हो तो रख लेती हूँ।" बुझे मन से मैंने थैला उनको दे दिया।

एक लाल कुर्ता देखकर वो बोली-" सान्या, इसकी कढ़ाई तो बहुत सुंदर और महंगी है। मैं इसकी कढ़ाई को ट्रांसफर करवा लूँगी।" ये कहकर उन्होंने वो कुर्ता अपने पास रख लिया।

दूसरा कुर्ता हाथ में लेकर बोली-“ मेहंदी या डाई लगाते समय भी तो कुछ चाहिए होता है ना!” दूसरा कुर्ता भी थैले से बाहर हो गया और मेम साहब की गोदी में जा बैठा।

एक सफ़ेद कुर्ता फैला कर देखा फिर बोली-“ ये तो होली के लिए काम आ जायेगा। अभी सफाई बाकी है दो-तीन कुर्ते तो अभी काम आ जायेंगे। शांति ये कुर्ते तू बाद में ले लेना।“ थैला लगभग खाली हो चुका था।

मेरे चेहरे से ख़ुशी चली गई और सान्या बिटिया के चेहरे पर आश्चर्य आ गया था।
जैसे ही मेमसाहब बाहर गई, बिटिया ने मेरा हाथ पकड़ा और बोली-“शांति उठ, मेरे पास सूट तो नहीं हैं; पर जींस-शर्ट बहुत सारे हैं। तेरी बेटी के काम आ जायेंगे।“

बिटिया मुझे कितना और कैसा देगी इसकी चिंता नहीं, उनके हाथों के प्यार की गर्मी ने मेरा मन भर दिया।

50. मिट्टी

मेरे नानू बहुत बड़ी गाड़ी में, गिफ्ट लेकर हमसे मिलने आतें हैं। माँ पूरे वक्त समझातीं रहतीं हैं-

“जाओ, नानू के पास बैठो!”

“उनका ध्यान रखना!”

“जाओ, नानू से ये पूछकर आओ!”

“जाओ, नानू को ये देकर आओ!”

“तुम अपना होमवर्क पूरा करके नानू के पास ही सो जाना!”

“देखो, अब कल नानू जाने वाले हैं तो उनसे कहना- नानू जल्दी वापस आना!”

“नानू को डिस्टर्ब मत करो, ज़रा उनकी प्राइवेसी का भी ख़्याल करना सीखो!”

जब दादू गाँव से आते तो माँ पापा से हर बार यही कहती हैं-

“इनको इतनी भी समझ नहीं, ये समय है आने का?”

“अब ख़ुद अपने कुछ काम क्यों नहीं कर लेते?”

“अवि कितना डिस्टर्ब हो जाता है! कितना भी मना करो भाग-भागकर उनके पास ही जायेगा।“

“ये सस्ते से सामान और सब्जियों का हम क्या करेंगे? ये सब तो हम ले ही लेते हैं। कुछ नया अलग हो तो बात अलग है। जाओ जाकर उन्हें वापस कर दो!”

“उनके साथ सोकर अवि की हैबिट स्पॉएल हो जाएगी! मुझें ये सब बर्दाश्त नहीं!”
आज दादू अभी शाम को ही वापस जा रहें हैं। मैंने माँ-पापा को आकर बताया और कहा-“ दादू को रोक लो ना! वो अभी वापस जा रहें हैं।“
 माँ चिढ़कर बोली- “आ गया ना संगत का असर, कितना भी दूर रखो, खेत के मूंगफली और आलू ज़ोर मार ही गये।“
पापा ने जवाब दिया-“ अब मिट्टी से पैदा हुई आदतें मिट्टी को खींच ही लेती हैं।

51. एक नज़र

दो दिन बाद नये घर का मुहूर्त है। घर की सजावट, मेहमान, खाना हर चीज़ के बारे में माँ पापा से बात कर रही है।
मुझे कमरे में बुला कर बोली- “शुभी, दोनों मौसी आ रही है। बड़ी मौसी शाम को ही चली जायेगी तुम उनसे रुकने की ज़िद मत करना। हाँ, छोटी मौसी 4-5 दिन रुकेगी। उसके बेटे को अमेरिका जाना है। उसे कुछ काम है।“
मैं सिर्फ़ इतना ही कह पायी-“माँ ऐसा क्यों?”

माँ ने मुझे चुप रहने का इशारा किया और आगे बोली- “मैंने तोहफों पर नाम लिख दिए है। बस ध्यान रखना! किसको क्या देना है!”

कपडों की कीमत का फर्क़ मुझें द्रवित कर गया- “बड़ी मौसी की बेटी को ये वाला सूट? और छोटी मौसी की बेटी को ये? माँ ऐसा मत करो !”

माँ ने सूट मेरे हाथ से लेते हुए कहा- “अब दुनियादारी तुझसे नहीं सीखनी है मुझे, जो बोला है वो ध्यान रखना बस!”

तड़प कर मैं बोल पड़ी- " आज आप मुझे और दीदी को कहती हो, हमेशा एक दूसरे का साथ देना। और आज जिसे साथ की जरूरत है उसका साथ देने की जगह? बड़ी मौसी बहुत ममता रखती है तुमसे। छोटी मौसी तो हमसे तब ही बात करने लगी ना, जब से पापा का काम ठीक-ठाक चल निकला। कल मैं भी दीदी के साथ या दीदी मेरे साथ ऐसा ही करें तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

इतने में दीदी कमरे में आई। उनके हाथ में हम दोनों की पार्टी के कपड़े थे। जैसे ही उन्होंने दोनों ड्रेस दिखाए माँ बोल उठी- "ये क्या, शुभी का ड्रेस तेरे ड्रेस जितना सुंदर क्यों नहीं बनवाया उर्मि?"

52. दूसरा रूप

बस से उतरते समय पति बहुत गुस्से में थे। घर में घुसते ही उसने मुझे पीठ पर ज़ोर से मारते हुए कहा-"क्या ज़रुरत थी उस लँगड़े की मदद करने की? उसकी बैसाखी उठाई और उसे बैठने को जगह भी दिलवाई बहुत नेतागीरी आ गई है तुझे!"

-"किसी असहाय की सहायता करने में क्या बुराई है? वो लड़की खड़ी रह सकती थी; उस आदमी का बैठना ज़रूरी था।"अपनी पीठ सहलाते हुए मैंने जवाब दिया।

-"अब जरूरी क्या है; ये तू तय करेगी?"
-"चढ़ते-उतरते बच्चियों, औरतों को छूना, उनसे टकराना, दुप्पटे साड़ियों को अनजान बनकर पकड़ने की जगह किसी जरूरतमंद का साथ दिया तो क्या बुरा किया?" जो हमेशा देखती थी आज पहली बार कह दिया।

-"मुझ पर नज़र रखती है? एक औलाद तो दे न पाई आज तक, न घर में चैन न घर के बाहर चैन से जीने देती है ये करमजली!"

-"घर हो या बाहर करम किसके काले हैं ये मुझसे ज़्यादा कौन बता सकता है? औलाद पैदा न होने के लिए जिम्मेदार कौन है ये अभी हम जानते नहीं हैं।"

-"आजकल तेरा बहुत मुँह चलने लगा है।" पति ने एकबार फिर हाथ उठाया मारने के लिए।

उसके हाथ को रोकते हुए मैंने ने कहा-"घर और बाहर तुम्हारे दो रूप है। जिस दिन मैंने अपना दूसरा रूप दिखा दिया उस दिन तुमको समझ आ जायेगा सहायता की ज़रूरत किसे ज्यादा है।"

53. चिता

जब से दोनों बेटों की शादी की जिंदगी के सुख कम ही हुए है। हम पति- पत्नी की दुनिया सिमट सी गई। सब भाग रहे है। हम दोनों के लिए समय कम होता गया और दोनों बेटे अपने परिवारों में व्यस्त होते गये।

हम दोनों में से कोई बीमार हो तो देर सवेर बेटे दवा ला देते। बस उसके बाद सारी सेवा हम ही, एक- दूसरे की करते।
कई दिनों से मेरी पत्नी बीमार थी। आज वो मुझे हमेशा के लिए छोड़ कर चली गई।

उसके पास बैठा रो रहा था। आंसू नही थम रहे थे। अब ये जीवन उसके बगैर जीना है ये सोच कर.....
रोते-रोते मैं ज़मीन पर झुक गया अब इस बूढे शरीर को ले कर बैठ भी नही पा रहा था।

इतने में बड़ी बहू पास आकर बोली-"पिताजी खुद को सम्हालिए" अब माँ की चिता की तैयारी, सारा क्रिया-कर्म करेंगे या आपको सम्हालेगे?”

आँसु रोककर मैंने बहू को कहा- “चिता तो अब मेरी सजनी है बहु, वो तो स्वर्ग में चली गई।“

54. चैन

हमारी दवाइयों की दुकान है।मै नगदी के काउंटर पर बैठती हूँ। मेरे पास ही एक महिला दवा देने वाले से कुछ बहस कर रही थी।

राम महिला को समझाते हुए-"पाँच सौ में दवा और ये प्रोटीन पावडर नही हो पायेगा।"

महिला चाहती थी दोनों काम हो जाये वो बोली -"तो ऐसा करो ताकत की गोली कम कर दो फिर?"

राम का धैर्य बस टूटने ही वाला था वो बोला -"नही फिर भी नही होगा।"

महिला अपनी ज़िद नही छोड़ पा रही थी वो थोड़ा और नर्म होकर बोली-"दवा तीन दिन की ..."

राम अब फट पड़ा-"अरे, आपको समझ..."

यह सब मैं सुन रही थी और लगभग समझ भी चुकी थी। राम उस महिला को कुछ और कहता इससे पहले मैंने उस महिला को अपने पास बुला लिया।

मैने उनसे कहा-"आप इधर आ जाइये, मैं देख लेती हूँ।"

मेरी आवाज़ के अपनेपन ने उन्हें हिम्मत दी और उनके मुँह से सच निकल गया वो बोली-"अपने शराबी और निठल्ले पति के खर्चे उठाने के बाद अपनी दवा के पैसे नही बचा पाती हूँ। इसबार बेटी ने ही पैसे जमा किये है और उसीकी ज़िद पर दवा लेने आई हूँ। क्या करूँ? माँ का दिल! खुद से ज़्यादा उस मासूम की चिंता होती है।"

वे बोली-"बेटी की परीक्षा का समय आ गया है। वो बहुत मेहनती है। मैं उसके लिए ये प्रोटीन पावडर लेना चाहती हूँ।"

इतने में उनकी बेटी आ गई।
माँ की ज़िद और पैसे की कमी से वो अनजान नही थी।

बोली-"माँ, इन सब से कुछ नही होता है। तुम अपनी दवा पूरी लो। मेरे लिए तो तुम्हारे हाथ का खाना ही काफी है।"

माँ का पूरी दवा लेकर चेहरा उतर गया। प्रोटीन पावडर के बिना ये दवा...
मैंने अपने पास से पावडर के नमूने के पैकेट उन्हें दिए। जिन्हें देखकर माँ का चेहरा खिल उठा।

जब बेटी ने उन्हें लेने से मना किया तो मैंने कहा-"बेटी ले लो, माँ को ये दवा तब ही आराम देगी जब तुम ये प्रोटीन पाउडर लोगी।"

सुनकर वो महिला मुस्कुरा उठी जिसका मतलब हर माँ समझ सकती है|

55. परीक्षा

बाल कटवाकर घर जा रही हूँ। रास्ते में कुछ मित्र मिल गईं। मेरा बदला हेयर स्टाइल देखकर सवालों की बौछार शुरू हो गई-
“ये क्या कर लिया?”
“कोई प्रॉब्लम (बीमारी) हो गई है क्या?”
“कोई मन्नत मांगी थी क्या?”
“पहले कितनी सुंदर दिखती थी!”
इन सबके सवालों का एक ही जवाब दिया-“ मेरी इच्छा थी इसलिए कटवा लिए!”
घर में घुसते ही हर सवाल का अलग-अलग जवाब देना होगा ये जानती हूँ।
पहला तीर दादी का था-“ अरे ये क्या, पागल हो गई है क्या तू? अगले महीने शादी होने वाली है और ये क्या कर डाला इसने!”
पिताजी ने गुस्से से कहा-“पुलिस की नौकरी कर रही हो तो मनमानी करने लगी हो तुम!”

माँ के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आई! वो दुःखी स्वर में बोली-“ ससुराल वालों को क्या जवाब देंगे बेटा? शादी का समय इतना पास है। एक बार पूछ भी नहीं कर सकती थी?”

माँ के डर को समझते हुए मैंने कहा-“माँ, रोज की ड्यूटी के बाद बालों की देखभाल अब नहीं हो पाएगी। अब जिम्मेदारियां बड़ जाएगी। इतनी आज़ादी तो होनी चाहिए ना माँ!”

“तेरे ससुराल वालों ने कोई बड़ी बात कर दी तो?” माँ का डर शब्दों का रूप ले गया।
“वो भी अच्छा ही होगा माँ, मेरी कद्र ज़्यादा है या मेरे बाल, नौकरी की ये भी पता चल जाएगा!”

56. मै वारी जांवा (व्यंग्य)

शहर क्या, देश के नामी स्कूल की प्रिंसिपल हमारे घर आई।मेरी खुशी का ठिकाना ही नही था।

सोशल साइट पर किसी से मैं बात कर रही थी। फोन को एक तरफ पटका और मैडम जी से बात करने बैठ गई।

मैडम जी ने ही बात शुरू की-"क्या करती है आप रिया जी?"

-"जी, एक कम्पनी का एकाउंट्स देखती हूँ।"

-"फिर तो हिसाब की बहुत पक्की होगी आप!"

-"जी मैडम मैने m.com. में टॉप किया था।"

-"मैने तो आज देखा, आप लेखिका और कवियत्री भी है।कैसे कर लेती है ये सब?घर की जिम्मेदारी, काम के बाद कैसे समय निकाल लेती है?"

-"क्या करे मैडम, सब करना पड़ता है अब हुनर है तो..."

-"आपकी कविता, कहानी कई पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। मैने आज पहली बार आपके अकाउंट को देखा।"

-"अरे, पर आपने कोई कमेंट तो नही दिया!"

-"आज सालों बाद अपना अकाउंट खोला था। देखा, आपके तो मित्रों की भरमार है।कमेंट करना तो भूल गई आपके मित्रों की लम्बी लिस्ट देखकर।"

(बहुत अच्छा लगा ये सुनकर की मैडम ने मेरी हैसियत देखी वो भी समझ गई होगी की मै कोई छोटी नही, बड़ी लेखिका हूँ)

-"अब ये रोज़ का रिश्ता है मैडम, सबसे निभाना पड़ता है तो दोस्त बढ़ ही जाते है।"

-"आपके हर दो दिन में बदलते प्रोफाइल फोटो को तो जबरदस्त लाइक मिलते है।कभी पेड़ के पीछे तो कभी झरने के नीचे; आप तो अपने बचपन की हो या परिवार की हर खुशी और याद सबसे साझा करती है। यहाँ तक की भोग की थाली की फोटो लगाना भी नही भूलती है।"

(आज तो दिल कर रहा था अपने सारे कमेंट्स मैडम जी पर वार दूँ।)

खुशी को छुपाते हुए मैने कहा-"अब ये साइट भी हमारे परिवार जैसी ही हो जाती है।"

-"रिया जी, घर, नौकरी के बाद अपने हुनर को वक्त देना एक बात है और सोशल साइट के बगैर सांस भी न लेना दूसरी बात है।इस सब के बीच में बच्चों का भविष्य आता है उसको सिर्फ लाइक नही उसपर कमेंट करना भी जरूरी है।"

(ये अचानक बात करते-करते मैडम जी का मुड़ क्यो बदल गया?)

-"रिया जी, आपने ये नही पूछा की मै यहाँ आई क्यों? मैं यहाँ आपकी बेटी, जो सातवीं में मेरी बेटी की ही कक्षा में है उसके बारे में बात करने आई हूँ।"

-"क्यों, क्या हो गया मेरी पारुल को? वो तो शहर के सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ती है।"

-" स्कूल चाहे जैसा हो आपकी जिम्मेदारी किसी भी हालात में कम नही हो सकती है! ये देखिए पारुल का वीडियो जो उसने मेरी बेटी को भेजा है। फ़र्क सिर्फ इतना ही है कि वो ये फोटो आपसे छुपाएगी और आप अपने फोटो...."

रिया जी ने मेरे हाथ से फोन छीन लिया और वीडियो देखकर उनकी आँखों से आंसू बहने लगे।अब उन्हें मिलने वाले लाइक और आंसुओ में जंग शुरू हो गई।अकाउंट्स में टॉप करने वाली माँ, अब ये हिसाब ठीक से रख पायेगी क्या?

57. नज़र के सामने

बिगड़ैल बेटा, जिससे घर तो क्या पूरा मोहल्ला परेशान रहता है। पति की आंख का तारा है, बेटियां जो कमाती और घर चलाती है पिता को उनकी कद्र नही!

आज त्यौहार का दिन और बेटे ने सुबह-सुबह बहनों का मन दुखा दिया। छोटी बेटी से बेटे ने हमेशा की तरह लड़कर पैसे ले लिए।

अभी पड़ोस के घर से शर्मा जी अपनी बेटी को लेकर घर आये। उनकी बेटी को हमारा लाड़ला गाड़ी से गिराकर चला गया था तो उसकी चोंट दिखाने आये थे।

हम ये सब निबटाकर घर में आये और पति ने बेटियों से खाना माँगा।

आज बेटियां जिद् करके घर में प्याज़ ले आई बड़ी बेटी अपने बालों में प्याज़ का रस लगा रही थी छोटी, जिसे कई दिनों से सब्ज़ी में प्याज़ डालना था; उसे आज वो भी पूरी कर रही थी।

पति ने दोनों बेटियों को देखा तो चिल्लाकर बोले-" जिस घर में आज तक प्याज़ नही आया उस घर में ये अनर्थ? धर्म भृष्ट करवा रही हो! जाति का ख़्याल तो किया होता, शर्म नही आती आंखों के सामने ऐसा होता देखते...?"

पति को बीच में ही रोककर मेरे मुँह से निकल गया-"आंखों के सामने ही तो ठीक है। पीछे का हाल रोज़ भुगतते तो हैं।"

58. रेत या चील

पति की पेंशन के बावजूद बहु के पंजे इस घर पर गहरे होते गए। बेटा, पोता-पोती, मेरे हक़, सब रेत की तरह हाथ से छूटते गये।

खाने-पीने की हर चीज़ के नाप-तोल बदलने लगे। दूध का कप छोटा तो सब्जियों, फल की मात्रा भी कम होती गई। सब देखते-समझते पर महंगाई और सबकी ज़रूरत समझ कर चुप रहते।

अपने हक़ और परिवार पर चील सी नज़र होनी चाहिए ये कल मैंने एक श्वान माँ से सीखा। कॉलोनी के बगीचे में शावक के बच्चों को सब कुछ न कुछ दे रहे थे। बहू भी उनके लिए रोज़ दूध ले जा रही थी।

आज रसोई में मैंने पति को दूध बड़े कप में देना चाहा तो बहु ने टोक दिया -“ अम्मा जी, वो छोटा कप रखा तो है! बहु के आगे विरोध की हिम्मत टूट चुकी है। चुपचाप छोटा कप उठा लिया। पर आज पहली बार लगा ये क्या हो रहा है? श्वान को दूध दिया जा सकता है। पर हम...

पति को दूध देकर उदास मन से बगीचे में चली गई। वहाँ बहु आज भी उन पिल्लों को दूध पिला रही थी।

जब शावक के बच्चे दूध पी रहे थे तो उनकी माँ दुर खड़ी सब देख रही थी। पर जब कुछ बच्चों ने उसके बच्चों को उठाया तो वो इतनी ज़ोर से भौंकी की बच्चे डरते हुए चीखें और पीछे हट गए।

डर के मारे बहु के हाथ से दूध का कटोरा गिर गया। उसके मुँह से निकल गया- “बाप रे, कितनी चौकन्नी है उनकी माँ!”

-“होना भी चाहिए बहु! जब कोई हक़ छीनने लगे तो चिल्लाना ज़रूरी है। अपने हकों पर चील से नज़र होनी चाहिए नही तो एक कप दूध भी रेत की तरह हाथ से निकल जाता है।“

नाम- सीमा जैन

जन्म- तिथि- 02/04/1964 बदनावर, जिला धार

शिक्षा- बी.एस.सी., एम. ए., टैक्सटाइल डिसाईनिंग डिप्लोमा

कार्य- अपना व्यवसाय, आकाशवाणी ग्वालियर में कॉम्पियर के पद पर कार्यरत, लेखन

उपलब्धि- 2015 से लेखन शुरू किया है। अबतक कई लघुकथाएँ प्रकाशित व पुरस्कृत हुईं हैं। 'मिन्नी' अंतर्राज्यीय 'लघुकथा किरण' पुरस्कार 2016 में मिला था। गैर- साहित्यिक पत्रिकाओं में लेख, कविता, कहानियां प्रकाशित हुईं हैं।

संपर्क- फ्लैट नम्बर 201, माधव नगर

संगम अपार्टमैंट

ग्वालियर-9

ईमेल- seema.jain822@gmail.com

फोन-08817711033

09479311077